आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2020-2022

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 5 | अंक 14 | उदयपुर शनिवार 01 अगस्त 2020 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

रक्षाबंधन, कावड़ और श्रवण

-डॉ. तुक्तक भानावत-

प्रतिवर्ष रक्षाबंधन का त्यौहार आता है और कावड़धारी श्रवण के कई अंकन घरों के बाहर लगा दिये जाते हैं। पहले तो दीवालों पर कावड़ ढोते श्रवण के अंकन कुंकुम आदि से महिलाएं स्वयं करती थीं पर धीरे-धीरे चितेरों ने कागज पर इनके अंकन बनाकर बेचने प्रारम्भ कर दिये। तब से कागज पर बने अंकन जिन्हें पाठा या पाना कहते हैं, ही अधिक चिपकाये जाते हैं। सारे राजस्थान में इस दिन श्रवण (सरवण) के बड़े कलात्मक और प्रतीकात्मक अंकन देखने को मिल जायेंगे।

लोकगायकों में श्रवण सम्बन्धी कथा-गीतों में वही कहानी मिलती है जो राजा दशरथ से सम्बन्धित है। उसमें श्रवण नदी के किनारे अपने अन्धे माता-पिता के लिए पानी लेने जाता है और उधर से राजा दशरथ श्रवण को कोई जानवर समझ शिकार की दृष्टि से तीर चलाते हैं। पास आकर देखते हैं तो उन्हें अपना ही भानजा श्रवण दिखाई देता है। मरते-मरते श्रवण दशरथ को अपने माता-पिता को पानी पिलाने को कहता है और श्वांस छोड़ देता है।

दु:खी हो दशरथ पानी पिलाने जाते हैं और सारी घटना कह सुनाते हैं। इस पर श्रवण के माता-पिता दशरथ को श्राप देते हैं कि जिस प्रकार हम अपने पुत्र के वियोग में दु:खी होकर प्राण त्याग रहे हैं, उसी प्रकार तुम भी पुत्र-वियोग में मृत्यु को प्राप्त करोगे। अन्य अलग-अलग गीतों में भी घुमाफिराकर यही कहानी मिलती है।

कथा-गीतों से भिन्न श्रवण की एक कहानी इस प्रकार है-

श्रवण के पिता का नाम संतन ऋषि तथा माता का नाम ज्ञानवन्ती था। दोनों जन्मांध थे और श्रवण को अत्यधिक प्यार करते थे। श्रवण भी उन्हें परमेश्वर की तरह मानता था। विद्यावती नाम की श्रवण की स्त्री थी परन्तु उसे अपने सास-ससुर की सेवा में तनिक भी रूचि नहीं थी। वह बड़ी चालाक और स्वार्थी थी।

उसने दो पैंदे वाली हण्डिया रख रखी थी जिसके एक पैंदे में वह खीर आदि अमृत भोजन बनाती और दूसरे में लूखे-सूखे बासी रोटी के टुकड़े रख छाछ-राब के साथ सास-ससुर को खाने को देती। श्रवण को इस बात की कोई जानकारी नहीं थी।

एक समय श्रवण अपने माता-पिता के पास भोजन करने बैठा। इतने में उसे बाहर से कोई बुलावा आ गया। वह अपनी थाली माता-पिता के सामने रख चला गया। माता-पिता जब भोजन करने लगे तो उन्हें उस स्वादिष्ट भोजन को प्राप्त कर बड़ा आश्चर्य हुआ। जब श्रवण लौटकर आया तो उन्होंने भोजन की प्रशंसा करते हुए पूछा कि आज कोई विशेष त्यौहार तो नहीं है जिसके कारण इतना बढ़िया भोजन बना। श्रवण ने जवाब दिया कि प्रतिदिन जैसा ही भोजन है तब माता-पिता ने अपने स्वादिष्ट भोजन की बात कही। इस पर श्रवण को बड़ा दु:ख हुआ। उसने इस बात का पता लगाया तो मालूम हुआ कि उसकी पत्नी वस्तुत: दो भांत का भोजन बनाती है।

अपनी पत्नी की इस वृत्ति से दु:खी हो श्रवण ने अपने अन्धे मां-बाप को तीर्थयात्रा कराने की सोची। एक कावड़ लाया और दोनों को उसमें बिठाकर चल दिया। कई महिनों बाद वह अयोध्या के निकट पहुंचा। एक रात श्रवण के माता-पिता को प्यास लगी तो वह पानी की टोह में इधर-उधर भटकता रहा तब कहीं जाकर उसे पानी होने का आभास मिला। वह वहां पहुंचा और पानी भरने को झुका ही था कि वहीं पास शिकार की खोज में बैठे राजा दशरथ ने उसे जानवर समझ बाण मारा जो उसकी कमर में जा लगा। यह अगन बाण (अग्नि बाण) था। बाण लगते ही श्रवण के मुंह से निकला-'हतो राम हतनोपुर गाम सरवण म्हारो नाम।'

आवाज सुन दशरथ दौड़े-दौड़े वहां पहुंचे और तब उन्हें पता चला कि उन्होंने तो अपने ही भानजे का शिकार कर दिया है। उन्हें बड़ा पश्चाताप हुआ। उन्हें जब पता चला कि श्रवण अपने माता-पिता के लिए पानी लेने आया था तो वे स्वयं बिलखते हुए गये और सारी दास्तां कह सुनाई। अन्धे दम्पती फूट-फूट कर राने लगे। उनके मुंह से यही निकला-'फिट रे दशरथ पाप कियो, भाणजो मार कांई जस लियो?'

और श्राप दिया कि जिस अग्निबाण से तुमने हमारे लाड़ले श्रवण को मारा उसी से जलते रहोगे और पुत्र-वियोग में अपने प्राण त्यागोगे। यह सुन दशरथ ने उस अग्निबाण को घिसना प्रारम्भ किया ताकि उसकी जलन का उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ सके परन्तु घिसते-घिसते उसकी एक फांस पानी में जा गिरी जिसे एक मच्छी ने निगल ली।

यह संयोग ही कहा जाएगा कि वही मछली दशरथ का भोजन बनी तो उसकी फांस खाने के साथ उनके उदर में चली गई। इससे उन्हें बड़ी जलन हुई। पेट में आग की लपटें उठने लगीं और वे बेचैन हो गये।

तभी किसी ने उन्हें सुझाया कि रानी कैकयी के मुख में अमी है। यदि वह राजाजी का अंगूठा अपने मुंह में रखे तो उनकी जलन मिट सकती है। रानी को यह बात कही गई तो उसने वचन चाहने की बात रखी। राजा मरता क्या न करता। रानी की बात स्वीकार की तो रानी ने उनका अंगूठा अपने मुंह में लेकर राजा की पीड़ा शान्त की।

कुछ समय बीत जाने पर जब राम को राजतिलक देने की बात आई तो रानी ने अवसर का लाभ उठाते राजा से पूर्व में दिये गये दो वचन का स्मरण कराकर वरदान मांग लिया, राम को वनवास और भरत को राज गद्दी। इससे आहत हो राजा दशरथ का प्राणांत हुआ।

रक्षाबंधन से सम्बन्धित मेवाड़ में तीन महत्त्वपूर्ण घटनाएं घटीं जिनका इतिहास में तो अधिक उल्लेख नहीं मिलता किन्तु वे लोकप्रचलित धारणाओं में जीवन्त बनी हुई हैं। जैन मुनि पंडितरत्न हीरामुनि ने ऐसे तीन आख्यानों का उल्लेख किया।

(अ) रानी कर्मावती और हुमायूं के प्रसंग में प्रसिद्धि है कि राणा सांगा के निधन के बाद बादशाह बहादुरशाह ने चित्तौड़ पर आक्रमण कर उसे बुरी तरह घेर लिया। रानी ने अपने को असहाय पाकर अपने विश्वसनीय सेवक के साथ रक्षा-धागा राखी भेजकर हुमायूं को लिखा, भाई तुम्हारी बहिन अभी घोर संकट में है। इस समय बिना किसी जात-पांत, कुल-देश तथा सम्बन्ध का विचार किये बिना बहिन की रक्षा के लिए लिख रही हूं।

इस समय हुमायूं गुजरात में शेरशाह से युद्ध कर रहा था। पत्र पढ़ते ही हुमायूं ने सेनापति से कहा, बहिन के प्रेम के धागे से अधिक मूल्यवान कोई नहीं है और सैनिकों के साथ स्वयं प्रस्थान कर कर्मावती की रक्षा की।

(ब) रूपनगढ़ की राजकुमारी के अप्रतिम सौंदर्य पर मुग्ध हो औरंगजेब ने मेवाड़ की ओर कूच कर दिया। रक्षा का अन्य उपाय न देख राजकुमारी ने उदयपुर के राणा राजसिंह को रक्षापाती भेजी और कहलवाया कि क्षत्रिय कन्या जीवन में एकबार ही पति का वरण करती है। मैं मन से आपकी हो चुकी हूं अत: स्वीकार कर रक्षा करें अन्यथा अपने प्राण विसर्जित कर दूंगी।

पुरोहित पाती लेकर उदयपुर आ रहा था कि बीच पहाड़ी मार्ग पर दुश्मनों ने उसे आहत कर दिया। शिकार को निकले राणा राजसिंह ने पुरोहित की मूर्छा दूर की। पुरोहित ने कहा, हिन्दुवा सूर्य! रूपनगढ़ की राजकुमारी ने मुझे रक्षापाती देकर आपकी सेवा में भेजा है। यह कह पुरोहित ने अपनी कमर में बन्धे वस्त्र की अनेक परतों में छिपाये पत्र को निकाल महाराणा को नजर किया।

पत्र को पढ़ते ही महाराणा आगबबूला हो गये। उनकी भौंहें तन गईं। मुखमण्डल दीप्त-प्रदीप्त हो उठा। भुजाएं कांपने लगीं। रोम-रोम अग्नि-बाण से मुखर होने लगे। बोले, राजकुमारी को अग्नि प्रवेश की आवश्यकता नहीं है। राजमहल उनकी प्रतिक्षा कर रहे हैं। मैं दुश्मन को ऐसा सबक दूंगा कि भूलकर भी मेवाड़ की ओर निगाह नहीं कर सकेगा।

देखते-देखते सैनिकों के अलावा मेवाड़ के गांव-गांव से रणबांकुरे हाथों में तलवार, तीर कमान आदि उपकरणों से सज्जित अश्वारूढ़ हो सहायतार्थ निकल पड़े और रानी की रक्षा की।

(स) उदयपुर के सन्निकट डेड़ कोस दूर बेदला के नव परिणित राजकुमार हाड़ी रानी के साथ मधुर-मिलन में अगेबगे थे कि अचानक मेवाड़ पर आई विपत्ति से उन्हें रणकूच करने का सन्देश मिला। राजकुमार बोला, मातृभूमि की पुकार भी क्या इसी अवसर की प्रतीक्षा कर रही थी। रंगमहल को छोड़ रणमंगल का प्रस्थान.....।

रानी यह सुन स्तब्ध रह गई। युद्धोन्मादी रणचण्डी का जैसे उस पर सत सवार हो गया। बोली, आप यहीं विश्राम कीजिये। मैं शीघ्र ही लौटकर निश्चिंत हो सुहाग-मिलन करेंगे।

यह सुनते ही राजकुमार को होश चढ़ आया। बोला, नहीं, नहीं, तुम जैसी वीरवर क्षत्राणी को पाकर मैं धन्य हुआ। मैं प्रलयंकर शंकर बन ताण्डव करता एक-एक दुश्मन को धूल चटा कर अभी लौटता हूं। रानी ने आरती उतार विजय- तिलक कर प्रसन्नतापूर्वक विदाई दी।

पोथीखाना

'बुन्देली बसंत' के बहाने उल्लेखनीय संस्कृति संरक्षण

छतरपुर के डॉ. नर्मदाप्रसाद गुप्त ने बुन्देली लोकसाहित्य, लोकसंस्कृति, इतिहास तथा परम्पराओं के रखरखाव, संरक्षण एवं लेखन के जरिये बड़ा ही उल्लेखनीय और मूल्यवान कार्य किया। उनसे मेरा बड़ा घनिष्ट परिचय रहा। उनके निधन के बाद उनकी स्मृति में प्रसंग नर्मदा द्वारा लोकसंस्कृति रत्न अलंकरण प्राप्त करने जब मैं छतरपुर गया तो उस यादगार समारोह में अनेक सृजन विभूतियों से आत्मीय भेंट करने का सौभाग्य मिला।

दूसरे दिन डॉ. बहादुरसिंह परमार भेंट करने आये तो बड़ी देर तक साहित्य संस्कृति के विविध पक्षों पर बातचीत होती रही। वहां बुन्देली विकास संस्थान के माध्यम से वे प्रतिवर्ष बुन्देली उत्सव का बड़े वृहद् स्तर पर रंगारंग आयोजन करते हैं और 'बुन्देली बसंत' नाम से वार्षिकी का सम्पादन करते हैं। उसके माध्यम से वे तब से ही मुझे कृपापूर्वक याद किये रहते हैं। इस बार का यह बुन्देली बसंत 2020 का 21वां अंक भेजा जिस पर मैं लिखने का लोभ संवरण नहीं कर पा रहा हूं।

वहां के राजपरिवार से सम्बद्ध शंकरप्रतापसिंह बुन्देला जो सब दूर 'मुन्ना राजा' के नाम से ही समस्तजनों में सम्माननीय हैं, बुन्देली उत्सव और बुन्देली बसंत के संरक्षक हैं। यही नहीं, वहां जितने भी आयोजन, उत्सव, समारोह होते हैं उनमें उनकी मुख्य भूमिका बतौर संरक्षक के रहती है। अपने अलंकरण समारोह में भी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित होकर उन्होंने समारोह को अकल्पनीय गौरव मण्डित किया था।

लगभग चार खण्डों में विभक्त बुन्देली बसंत के 160 से अधिक पृष्ठों में भाषा साहित्य और आलोचना, इतिहास परम्परा और संस्कृति, बुन्देली गद्य और बुन्देली काव्य के अन्तर्गत 85 से अधिक सृजनकारों की सृजनियां, बुन्देलखण्ड अंचल के प्राचीन वैभव और अधुनातन लेखन की प्रभावी प्रस्तुति देती हैं।

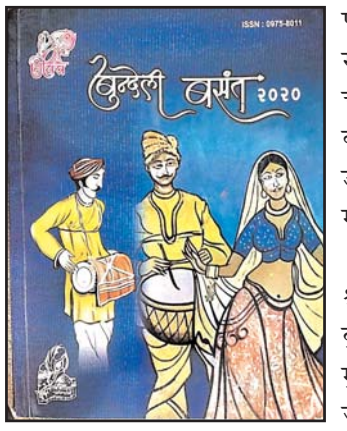

सम्पादकीय के अन्त में डॉ. परमार लिखते हैं- ''अपने आसपास बिखरी पड़ी लोकसामग्री को सहेजिये अन्यथा ये सब समय के साथ बिला जाएगी। हम आने वाली पीढ़ी को क्या देकर जायेंगे? खानपान, बोलीबानी, रीतिरिवाज, लोकगीत, कथाएं, गाथाएं, परम्पराएं, संस्कार सब समय की मार से परिवर्तित होकर पश्चिमी रंगढंग से ढल रहे हैं। समय के साथ सब बदलता है किन्तु बदलाव ऐसा न हो कि उसमें पुराने की खुशबू न हो। बदलाव मानव स्वभाव है। उसको अपनाइये किन्तु पुराना जो भी अच्छा है उसे नये सांचे में ढालिये तो हम नई पीढ़ी को सुगंधित संस्कृति सौंप सकेंगे।''

'जब बापू मेरे घर पधारे' लेख में 83 वर्षीय गुणसागर सत्यार्थी ने अपने बचपन का जिक्र करते हुए लिखा कि कांग्रेस का सदस्य बनने के लिए एक चवन्नी शुल्क लगती थी और लोग दौड़-दौड़ कर सदस्य बनते एवं गाते थे-

'एक चवन्नी चांदी की, जै बोलो महात्मा गांधी की।' (पृष्ठ 7)

इसे पढ़कर मुझे अपने बचपन की याद हो आई जब हम बच्चे मिलकर एकलंघी लंगड़ा खेल खेलते समय दोनों हाथ ऊपर कर एक पांव से उछले। पारा लांघते समय एक साथी बोलता, 'एक चवन्नी' दूसरा बोलता, 'चांदी की।' लांघते समय सभी उच्चारण करते, 'जै बोलो महात्मा गांधी की।'

इसी प्रसंग का डॉ. चित्रगुप्त श्रीवास्तव का 'ग्रामीण बुन्देलखण्ड में बालपन' लेख मुझे ठेठ बचपन में ले जाता है जब संवत्सरी (छमछड़ी) पर नये कपड़े पहन स्कूल जाते और हाथों में एक-एक डंका लेकर कभी स्वयं अपने डंके आपस में टनटनाते तो कभी दूसरे साथी के साथ डंका से डंका मिलाकर नृत्यमय डग भरते गीत-पंक्ति उच्चरित करते-

'छमछड़ी, भाई छमछड़ी, लैसे घोड़ा लैसड़ी
एक घोड़ो आरपार, जीं पर बैठे मियां माल
मियां माल री काली टोपी
काला है किसन जी, गोरा है मगनजी
रावजी नंगारो दीधौ, जीत्या हड़ुमानजी।'

श्रीवास्तवजी ने अंग्रेजी काल में जब बुन्देलखण्ड में रेलगाड़ी गांव के करीब से गुजरने लगी तब बच्चे जो गीत गाते उसका जिक्र करते हुए लिखा-

'रेल चली भाई रेल चली,
नौ सौ डिब्बा छोड़ चली
एक डिब्बा आरपार,
उसमें बैठे लाट साब
लाट साब की काली टोपी
काले हैं कल्यानजी,
भूरे हैं भगवानजी
सीताजी के सामने कूद पड़े हनुमानजी।'
(पृष्ठ 123)

ऐसे और भी कई लेख हैं यथा बुन्देली आभूषण, कथाएं, गाथाएं, कहावतें, आख्यान और बहुत कुछ। जनपदों के इतिहास पर तो लेखकों ने प्रमाण दे-दे कर काफी कुछ लिखा है पर लोकधर्मी परम्पराओं में जीवन्त साक्षात संजीवनी के रूप में जन-जन के कण्ठासीनों पर जो विविध रंगी अनेक विधाओं की अखूट बहलाव देती सम्पदा प्रचलन में है उस पर सांस्कृतिक इतिहास लिखने की ओर अब कुछ महानुभावों का ध्यान गया है। उनमें डॉ. नर्मदाप्रसाद गुप्त और डॉ. बहादुरसिंह परमार बुन्देलखण्डी विरासत को संरक्षित करने और सहेजने में आगेवाणी हैं।

आशा है, इसओर मुन्ना राजा जैसे प्रेरक, मार्गदर्शक तथा सम्बलधर्मी के सान्निध्य में अधिकाधिक शोधकर्मी, सुधिजन, संस्कृतिकर्मी ज्योतिर्विद होंगे। **-म. भा.**

बुन्देली बसंत-2020, संरक्षक शंकरप्रतापसिंह बुन्देला 'मुन्ना राजा', सम्पादक डॉ. बहादुरसिंह परमार, प्रकाशक बुन्देली विकास संस्थान, छतरपुर (मध्यप्रदेश)-471001, सहयोग राशि 200 रूपये। मो. 9425141455 तथा 998153055

विलुप्ति के कगार पर दानवीर कर्ण की कथा

-डॉ. कहानी भानावत-

बुन्देलखण्ड में वासदेवा चुटकी और पैजना नामक वाद्यों के सहारे अपनी मधुरिम गायकी द्वारा लोगों पर जादुई असर कर अपनी परम्परा का ठाठदार निर्वाह किये हैं हालांकि अब ये लोग इनेगिने रूप में ही इस कार्य से जुड़े हुए हैं।

बुन्देलखण्ड में ही नहीं, देश के अन्य प्रान्तों में भी गायक जातियों की यही स्थिति बनी हुई है। इससे हम उन बहुत सारे गाथा-गीताख्यानों से वंचित हुए जा रहे हैं जिनका लोकजीवन में बड़ा प्रचार-प्रसार रहा है। बहुत से गीत आख्यान तो ऐसे हैं जो किसी पर्व, उत्सव से ही सम्बन्धित हैं। वे उन्हीं अवसरों पर गाते देखे जाते हैं।

ये गीत-गाथात्मक आख्यान गायकों के पूरे परिवार का पालनपोषण करते थे। छोटे-छोटे बालक-बालिकाएं भी संस्कारवत वातावरण पाकर नन्हीं उम्र से ही गाने-बजाने तथा गावणी द्वारा गांव में घर-घर फेरी देते बड़े ही मधुर कण्ठ से लोगों को मोहित करने में दक्ष बन जाते। अब यह स्थिति नहीं रही।

डॉ. महेन्द्र भानावत ने बताया कि इसके पीछे गायकों-वादकों के समाज का सोच भी बदल गया है। उनमें भी सामाजिक परिवर्तन के बहाने ऐसे कार्य नहीं करने की कठोर बंदिशें लगादी गईं। बदलाव की यह बयार उन सामाजिकों में भी घर कर गईं जो इनके प्रति सहृदय नहीं रहे यानी यजमान भी टूटते गये। मनोरंजन के साधन टीवी आदि घर-घर की शोभा बनने के कारण भी इस तरह की आस्थापरक रूचियां समाप्त हो गई। शिक्षा का असर भी देखा गया और विकास की राह में ऐसी परम्पराएं रोड़ा बनने की मान्यताएं भी कारण बनीं।

जो भी हो। पूरे देश में ही ऐसी उथल-पुथल होने के कारण राजस्थान के रात्रि मनोरंजनपरक ख्याल, तमाशे, बहुरूपियों की कला, कावड़ वाचन, पड़ परम्परा जैसी सारी विधाएं देखते-देखते समाप्त हो गईं। त्यौहार-उत्सवों पर भी ऐसे मनोरंजन के जो अवसर देखने को मिलते वे भी धूमिल हो गये।

बुन्देलखण्ड के वासदेवा यदाकदा अन्य प्रदेशों तक घूमते-घामते चले जाते और देशाटन द्वारा दक्षिणा प्राप्त करते थे। कभी-कभी वे बड़े सवेरे ही अपनी मीठी गायकी सुनाते श्रोताओं को आकर्षित किये रहते। घर-घर फेरी लगाने के अलावा कभी-कभी वे सड़क के किनारे वृक्ष पर चढ़कर कान में ऊंगली दिये बड़े ही करूण स्वर में उदात्त गायकी के स्वर बिखेरते और हर पंक्ति के साथ 'हर-हर गंगे' का उच्चारण करते तो कभी 'बारह बरस बीते जजमान अब तो करो दच्छिना दान' की टेर में राहगीरों को बरबस रोकते। राहगीर वृक्ष के नीचे रखे कपड़े पर कुछ-न-कुछ छोटा-बड़ा सिक्का भेंट देकर अपना मन मुदित किये रहते।

यहां बुन्देलखण्ड में वासदेवा में प्रचलित दानवीर राजा कर्ण की गाथा का सार दिया जा रहा है। यह गाथा डॉ. ओमप्रकाश चौबे द्वारा उमरारी तथा मड़ैया के बुजुर्ग वासदेवा गायकों से लिपिबद्ध की गई है। 'बुन्देली बसंत-2020' नामक छतरपुर से प्रकाशित वार्षिक पत्रिका में इसका मूल पाठ तथा अर्थ दिया गया है। यहां उसका संक्षिप्त सार-रूप प्रस्तुत किया जा रहा है।

संसार में राजा कर्ण जैसा अन्य दानी नहीं हुआ। वह प्रतिदिन सोने का दान करता। उसके साथ उसकी रानी गुड़ एवं खीचड़ी का, पुत्र गऊ का, पुत्रवधू वस्त्र का तथा पुत्री मोतियों का दान करती थी। इस दान की महिमा का बखान अन्य लोकों के साथ पशु-पक्षियों तक में होता। एक दिन एक कौआ इन्द्र के पास पहुंच बोला, 'पृथ्वीलोक में कर्ण राजा जैसा दानी नहीं हुआ। सभी लोग उसके दान की चर्चा करते-करते आपको स्मरण करना भूल गये हैं।'

यह सुन इन्द्र और कृष्ण साधु भेष धारण कर राजा कर्ण की परीक्षा लेने पहुंचे। उन्हें कर्ण का महल नहीं मिल पा रहा था। अत: रास्ते में खेल रहे बच्चों से पूछा तो बच्चों ने कहा, 'बाबाजी, इस बस्ती में एक नहीं, पांच कर्ण निवास करते हैं। पहला बस्ती का कोटवाल, दूसरा कलाल जाति का, तीसरा ब्राह्मण, चौथा वणिक-पुत्र और पांचवां राजपूत कर्ण राजा है। उसके महल का प्रवेश हाथी दरवाजा से है। राजा कर्ण प्रतिदिन स्वर्ण दान करता है।'

यह सुन साधु राजा के पास पहुंचे। राजा कर्ण ने उनका बड़ा स्वागत-सत्कार-सम्मान किया। चरण पखारे। चरणोदक लिया और उचित आसन देते दूध या फलाहार लेने की मनुहार की। उनके मना करने पर बकरा या मृग का शिकार करने को कहा। इस पर साधुओं ने कहा, 'इनसे हमें कोई लेना-देना नहीं पर राजन, तुम अपने पुत्र को क्यों भूल रहे हो? हम उसी के मांस का भक्षण करना चाहेंगे।'

साधुओं के मुंह से ऐसी बात सुन राजा असमंजस में पड़ गया। उसके मन में विचार आया कि पुत्र तो रानी का है अत: उससे सलाह-मशविरा करना जरूरी है। यह सोच राजा अपनी रानी के पास गया। रानी ने सारी बात सुन विचार किया कि स्थिति बड़ी गंभीर आन पड़ी है। बेटा देने को मना करने पर राजधर्म जाता है और हां करने पर बेटे से वंचित होना पड़ता है। दोनों में से राजधर्म की रक्षा को सर्वोपरि मानते हुए बेटे को देना ही उचित समझा।

राजा साधुओं के पास पहुंचा। उसने अपने पुत्र पर आरी चलाई और बोटी-बोटी काट कर मांस पकाया और उन्हें परोसा गया। परोसने के बाद राजा ने उन्हें भोजन करने की विनती की। इस पर साधु बोले, 'राजन! पहले तुम लो फिर हम भोजन करेंगे।' राजा ने ज्योंही पहला कौर उठाया कि मां दुर्गा प्रकट हुई। उसने राजा का हाथ पकड़ा। फिर सत्यदेव ने राजा का हाथ पकड़ा और तदनन्तर कृष्ण ने साक्षात् हो कहा, 'राजन! ठहरो। मैंने तुम्हारा अडिग सत्य परख लिया। सचमुच तुम पक्के सत्यव्रती हो। तुम्हारी तुलना पृथ्वी पर किसी से नहीं हो सकती। पुकारो अपने पुत्र को।' राजा ने अपने पुत्र को आवाज लगाई तो वह तपाक से उपस्थित हुआ।

स्मृतियों के शिखर (104) : डॉ. महेन्द्र भानावत

अद्‌भुत, अचूक और अतुलनीय शिकारी थे तुलसीनाथ धायभाई

अच्छा काम करने पर महाराणा साहब इज्जत और इनाम देते। यह इनाम आदमियों को ही नहीं जानवरों तक को प्राप्त होता। महाराणा भूपालसिंहजी ने सामगज हाथी को पूरे साल भर के लिए घी-शक्कर की विशेष खुराक प्रदान की। मुझे 500 बोर की दुनाली बन्दूक तथा सोने का सरूपशाही मोहरों का बटन का सेट, दरीखाने की बैठक, जीकारा, माजा व नाव की बैठक आदि इज्जत अता फरमाई तथा डबोक पधारकर मेरे मकान व बाड़ी को पवित्र किया।

मोटे-मोटे मगरे, मगरों से मिले छोटे-छोटे मगरे। मगरे के ऊपर मथारे, मथारों पर ऊंची-नीची घाटियां, टेढ़ेमेढ़े रास्ते और घुप्प-घुप्प गेलियां, फिर खादरे खूब बड़े, खूब घने, गहरी छाया और घनी झाड़ीब, खादरों से लगे फिर मथारे। मगरों के आजूबाजू की फरड़ और इधर-उधर के ऊंचे-ऊंचे स्थान जिनके कई नाम। इन मगरों में बने शिकारगाह। शिकार के हाके के लिए जगह-जगह लुके छिपे हाकेवाले टोंकिये, नौकरिये। हाथी, घोड़े, ऊंट इन सबके सवार और अफसर। शिकारी कुत्ते।

कभी शान्त, स्तब्ध वातावरण सारे वनखण्ड का तो कभी हाके होहल्ले। हाकों पर हाके। पटाखों की आवाज, हाथियों की चिंघाड़, घोड़ों की हिनहिन, लट्‌ठ, बरछी, तलवार और बन्दूकधारियों की रेलपेल और इन सबके बीच सारे मगरों को गूंजाता, घाटियों की गहरी ऊंजगूंज देता, कभी डकार भगाने वाला तो कभी गरजकर दहाड़ें मारने वाला सैंकड़ों के बीच अकेला जंगल का राजा शेर।

बलिष्ठ बांका और चकमेबाज ऐसा कि कभी गहरी दरार में छिप जाय तो कभी गुफा में गहम जाय। कभी ऊंडे गहरे पानी में डुबक जाय तो कभी ऐसा अदृश्य हो जाय कि आंखें फटी की फटी रह जाएं। पेट और पीठ की गोली आर-पार निकल जाय चाहे पसलियां बाहर आ लटकें।

अगला हाथ टूट जाय, चाहे जबड़े जमीन छूने लगें मगर यह आदमखोर वृक्ष पर चढ़कर भी उन आदमियों की अर्थी बनाने में नहीं चूकेगा जिन्होंने उसके शाही साम्राज्य में आकर उसके ऐश्वर्य को चोट, खोट और चुनौती दी।

यह परिदृश्य है मेवाड़ के महाराणा की शाही शिकार का जिसे वर्णित किया शिकारी तुलसीनाथ धायभाई ने जो तीन-तीन महाराणाओं की शिकार-सेवा में रहे। कहने लगे- ''शिकार का पहला पाठ तो घर में अपने पिताश्री जगन्नाथसिंहजी से ही सीखा और जब तीन बरस का था तब ही महाराणा फतहसिंहजी ने मुझे अपने पास रख लिया।

महलों में ही मेरे रहने और खाने-पीने की व्यवस्था करवा दी। ये महाराणा शिकार की शिक्षा-दीक्षा देते। पन्द्रह बरस तक इनकी सेवा में रहा और लगभग सौ-सवा सौ शिकारों में भाग लिया।

फतहसिंहजी बड़े रोबीले और फुर्तीले चुस्त स्वभाव के अव्वल शिकारी थे। ऊंची-नीची पहाड़ियों और तंग घुमावदार घाटियों में लम्बा पैदल सफर कर अपना शिकार स्वयं तलाशने में वे बड़े प्रवीण थे। शेरों के साथ-साथ उनके साथ घुड़सवारी में रींछ की शिकार का भी मैंने बड़ा मजा लिया। मेवाड़ के महाराणाओं में सबसे बड़े शेर का शिकार भी इन्हीं महाराणा ने किया। यह शेर ग्यारह फीट ग्यारह इंच का था जो चित्तौड़ के बीजेपुर के जंगल में मारा गया।

फतहसिंहजी के देवलोक होने पर जब महाराणा भूपालसिंहजी गद्‌दी बिराजे तो उनके साथ मेरी नौकरी जुड़ गई। उन्हें अधिक नहीं तो भी तीन सौ शेरों की मैंने शिकारें खेलाईं जिनके बड़े रोचक और रोमांचक अनुभव हैं। उनके देहावसान के बाद जब भगवतसिंहजी महाराणा बने तो दो सौ शेरों की शिकारें उनको करवाई। राजकुमार महेन्द्रसिंहजी को भी शिकारें कराईं और समय-समय पर इस राज्य में जो राजा, महाराजा, वायसराय तथा विशिष्ट मेहमान पधारे उनको जो शिकारें करवाईं वे भी गिनती में कम नहीं हैं।''

ये शिकारें तो धायभाईजी ने दूसरों को कराईं मगर इनकी स्वयं की शिकारें भी बड़ी अजब-गजब की रही हैं। पूछने पर उन्होंने अपने मस्तिष्क को कुरेदा और सलवटों पर ऊंगलियां दाब बोले- 'मैंने 50 तो खुद के तथा 40 दूसरों के जख्मी शेर मारे। 150 अधवेसरों को धर दबाया। 500 सूअर मारे जिनमें 50 के करीब घुड़दौड़ में। इनके अलावा 12 रींछ, 20 सांभर, 12 हिरन, 10 चारसींगा हिरन, 20 चीतल सांभर, 125 मगर, 4 जल मानस, 4 सेली, 50 खरगोश, 8 भेड़िये, 4 कुरूकुत्त, 10 नीलगायें, 10 जरख, 50 हरियम फोंत खेलाये। जंगली मुर्गों में 20 चोखारे तथा 15 दोखारे और 100 के करीब विविध किस्म वाली मछलियां मौत के मुंह में डालीं।'

महाराणा फतहसिंह, भूपालसिंह, भगवतसिंह तथा महेन्द्रसिंह मेवाड़

शिकारों के लिए जगह-जगह के मगरे-मगरी सुरक्षित रहते। उदयपुर के कई मगरे तो प्रसिद्ध ही थे। जयसमुद्र, चित्तौड़, कुंभलगढ़, माण्डलगढ़ के मगरे भी बड़े नामी थे। सब मगरों के अलग-अलग नाम और खासियत। मेवाड़ी संस्कृति के प्रतीक इन मगरों के कितने-कितने सुन्दर नाम और इनकी ओलखाण है। सुनिये-

शिकार ओदी

उदयपुर का बांकी मगरा, कलेरनामी मगरा, नाहर मगरा, मकेरड़ा मगरा, राखिया मगरा, होड़े मगरा, हिंगलाजिया मगरा, कमलोदे मगरा, भवाणी मगरा, सीकलिया मगरा, बागदड़े का मगरा, कन्नोड़ा की मगरी, मइया नामी मगरा, तिखिया मगरा, कोल्यारी मगरा, धूणीवाला मगरा, बाणानामी मगरा। जयसमुद्र का सेखड़ी मगरा, खानाडेयानामी मगरा, केर मगरी, चाटपुरिया मगरा, राखियानामी मगरा, बामनिया, सलिया खेड़ा व लोड़िया मगरा।

राजनगर का बीजरणा का बीड़ा तथा गढ़वाला। करेड़ा का भरकमाता का मगरा। ईसवाल का चोरमार पूंछड़ी मगरा। उदयसागर का कमलोदनामी मगरा व सन्तु। यही नहीं, देबारी का घण्टीवाला मगरा तथा कुंभलगढ़ का बनोकड़ा मगरा बड़े नामी हैं जिनमें शिकारगाह बने हुए हैं। मरदाना शिकारगाह के अलावा कहीं-कहीं जनानामूल भी बने हुए हैं जहां महारानीजी बैठकर शिकार खेलती थीं।

कौन से मगरे में कहां शिकार है? कौन शेर कहां आतंक मचा रहा है? शिकार की तैयारियां कैसी चल रही हैं? शिकार की व्यवस्था के लिए किसको कहां से बुलाना, भेजना है? शिकार सम्बन्धी ऐसे पचासों संकेत-सन्देश होते जो दूर-दूर तक भेजने पड़ते और इन सारी जगहों की जानकारी रखनी पड़ती। इसके लिए विशेष प्रकार के गोल कांच पर सूर्य की किरणों से चलका देकर सन्देश आदान-प्रदान किये जाते। ये कांच हेलुग्राफ कहलाते जिनसे बीस-पच्चीस किलोमीटर दूर तक के समाचार लिये दिये जाते। हेलुग्राफ के अतिरिक्त झंडियों के संकेत से भी यह कार्य होता। रात्रि को विशेष प्रकार की रोशनी इस कार्य को पूरा करती।

महाराणा जब भी शिकार पधारने का हुकम देते, शाही तैयारियां प्रारम्भ हो जाती। कभी चित्तौड़ के हरणी मूल तो कभी बोकड्‌या मूल। कभी अरन्यादेह तो कभी करूदिया, कभी जेला की धार तो कभी सुखझर आमझर। कभी जयसमुद्र के गामड़ीकोट तो कभी सालाड़ाकोट, मुगदरा, कुण्डालिया, धामदर, उंचिया मगरा मूल। कभी माण्डलगढ़ के अधर शिला तथा छोटी सड़क मूल पर तो कभी उदयपुर की खास ओदी, दीवान ओदी, रंग बुर्ज, बड़ा नारा, छोटा नारा, चौपड़ की मूल पर शिकारों की तैयारियां होतीं। महीने-महीने भर शिकारें होतीं। महीनों-महीनों तैयारियां चलतीं।

अच्छा काम करने पर महाराणा साहब इज्जत और इनाम देते। यह इनाम आदमियों को ही नहीं जानवरों तक को प्राप्त होता। महाराणा भूपालसिंहजी ने जब चित्तौड़ के हथनी मूल में शिकार किया तब सामगज हाथी ने अपनी जान जोखिम में डालकर जो बहादुरी दिखाई उस पर उसे पूरे साल भर के लिए घी-शक्कर की विशेष खुराक प्रदान की और मुझे 500 बोर की दुनाली बन्दूक तथा सोने का सरूपशाही मोहरों का बटन का सेट बख्शीस दिया। इसके अलावा दरीखाने की बैठक, जीकारा, माजा व नाव की बैठक आदि इज्जत अता फरमाई तथा डबोक पधारकर मेरे मकान व बाड़ी को पवित्र किया। रियासतों में यह सब इज्जत बहुत बड़ी मानी गई है।

धायभाईजी ने बताया कि मेवाड़ की शिकारें ही नहीं बल्कि शिकार सम्बन्धी शस्त्र भी बड़े प्रसिद्ध रहे हैं। भारत यात्रा करने के पूर्व जार्ज पंचम ने इंग्लैण्ड की कम्पनियों को अच्छी बन्दूकों के लिए कहा कि सबसे अच्छी बन्दूकें भारत में और खासतौर से महाराणा मेवाड़ के पास हैं।

जार्ज ने यह बात महाराणा फतहसिंहजी को लिखी तब यहां से 470 बोर हिलबाण तथा 450 बोर गेंडावाली कोरराइट बारूद की तथा दो रूद्रबाण व शक्तिबाण नामी काले बारूद की बन्दूकें भेजीं। इनसे शाहजादा ने नेपाल की तराई में कोरराइट बन्दूकों से 9 गेंडे, 17 शेर, 2 रींछ तथा 2 अधवेसरों की शिकारें खेलीं।

शिकार में पटाखों की उपयोगिता के सम्बन्ध में पूछने पर तुलसीनाथजी ने बताया कि पटाखों से जहां शिकार निश्चित जगह तक धकेली जाती है वहां किसी जानवर के कहीं दब जाने अथवा जख्मी हो जाने पर भी पटाखे अच्छा काम करते हैं परन्तु पटाखों से अनर्थ भी कम नहीं हुआ है।

- शेष पृष्ठ सात पर

शब्द रंजन

उदयपुर, शनिवार 01 अगस्त 2020

सम्पादकीय

क्या सोचा क्या हुआ जारहा

राजस्थान में कांग्रेस-कांग्रेस के बीच जो घमासान हो रहा है वह द्वन्द्व परिणाम विहीन हो गया है। एक तरफ मुख्यमंत्री अशोक गहलोत हैं तो दूसरी तरफ सचिन पायलेट। पायलेट गहलोत सरकार में उप मुख्यमंत्री तथा प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष रहे। इन दोनों ही पदों से वे हटा दिये गये हैं मगर कांग्रेस की सदस्यता उनकी बरकरार है। वे स्वयं भी छोड़ नहीं रहे हैं और न उन्हें सदस्यता से ही हटने का साहस हो रहा है।

यह गति कांग्रेस पार्टी के लिए भी और स्वयं अशोक गहलोत तथा सचिन पायलेट के लिए भी सांप-छछून्दर जैसी हो गई है। ऐसा किसी ने नहीं सोचा था। गहलोत और पायलेट दोनों को अपनी-अपनी विजय की उम्मीद थी।

लोगों को भी लग रहा था कि आलाकमान कोई निर्णय लेगा पर उसकी गति भी 'कुछ कही न जाय' जैसी हो गई। वह गहलोत को गद्दी से हटाये तो बुरी तरह फंस जाय और पार्टी मजबूत होने की बजाय कण-कण भी हो सकती थी तथा पायलेट को उगता सूरज मान मुख्यमंत्री के आसन पर बिठा दें तो एक तो उनके पास बहुमत नहीं फिर पार्टी में स्थायीत्व आने की बजाय अराजकता ही देखने को मिले।

मध्यप्रदेश में कांग्रेस की स्थिति कुछ और थी वहां ज्योतिरादित्य सिंधिया पायलेट की बजाय अधिक पावरफुल और दमदार अस्तित्व लिये थे सो चट मंगनी पट ब्याह हो गया तथा कमलनाथ मलनाथ हो हाथ मलते रह गये। भाजपा ने भी सिंधिया का बड़ी होशियारी से मंगलाचरण किया तथा शेरे शिवराजसिंह को भूषण मण्डित कर दिया।

राजस्थान में भाजपा सब कुछ चुपचाप देख रही है पर ठण्डी नहीं है। वह मौके की तलाश में है। 'रहिमन चुप व्है बैठिये देखि दिनन को फेर' का समझ-मंत्र लेकर कोई हलचल नहीं दे रही है। वह कछुआ धर्म को बारीकी से समझ बैठी है। उसे कब सिकुड़ना कब फैलना बखूबी आता है। पायलेट भी इसी बेड़े को पकड़े अपनी बाड़ की रूखाली कर रहे हैं।

वे 'वाच एण्ड वेट' की चादर ओढ़े हैं। उन्हें कोई जल्दी नहीं है। वे 'भाजपा में नहीं जाऊंगा' की घोषणा कर बहुत कुछ इशारा दे चुके हैं। आगे कोई तुरप न खेल रहे हैं न एक्सन ही दे रहे हैं।

रही गहलोत की बात तो भीतरी भय से तो ग्रस्त हैं ही हालांकि बाहर से तेवर दिखाते हुए तीखे होते जा रहे हैं। वे राज्यपाल की सांकल खटखटा चुके हैं और पूरे देश के राज्यपालों के आंगन में भी कांग्रेस अपनी अंगीठी बता चुकी है।

जनता बेसमझ नहीं है। कोरोना की स्थिति सबओर चमक पर है। ऐसे में देखना होगा आखिर ऊंट कब किस करवट पर बैठेगा।

शब्द चर्चा

पिछवई और पछेड़ी

श्रीनाथजी की पिछवई

गुजरात की माताजी की पछेड़ी

पिछवई और पछेड़ी दोनों का शाब्दिक अर्थ है पीछे की ओर लेकिन मात्र यही अर्थ कोई कारगर नहीं है। एक विशिष्ट अर्थ में दोनों का सम्बन्ध एक चित्रात्मक कपड़े से है जो देव-देवी की मूर्ति के पीछे लगाया जाता है।

राजस्थान में पिछवई कला नाथद्वारा की अति लोकप्रिय है। यह पट्ट श्रीनाथजी के पीछे लगाया जाता है। पिछवई में मुख्य रूप से श्रीनाथजी का चित्रांकन रहता है। इसके अन्य रूपों में कृष्ण की बाललीलाओं से जुड़े विविध प्रसंग लिये होते हैं। वैष्णव सम्प्रदाय के मन्दिरों में इसका प्रयोग होता है। इस चित्रावली के निर्माता नाथद्वारा में सर्वाधिक हैं। इसके विविध रंगों में कलाकार की दक्षता को देखते हुए इसका मूल्य निर्धारित होता है। सोने के काम वाली पिछवई, हीरा-मोती जड़ी पिछवई लाखों रूपये मूल्य लिये होती है।

सामान्य अर्थ में देखें तो उदयपुर के राजमहलों के पीछे की बस्ती पीछोली नाम लिये है। ऐसे ही शुरू-शुरू में जो महल बना उसके पीछे की झील पीछोला कहलाई।

गुजरात में पिछवई की जगह पछेड़ी शब्द प्रचलन में है। वहां मातृदेवी के पीछे जो आयताकार कपड़ा टांगा जाता है उसे पछेड़ी कहते हैं। इस चित्रपट के केन्द्र में देवी मां और शेष हिस्से में देवी से सम्बन्धित कथाएं, प्रमुख घटनाएं चित्रित होती हैं। ये चित्र चित्रकार द्वारा हाथ से या फिर लकड़ी के ब्लॉक प्रिंट से भी निकाले जाते हैं।

गुजरात की माता देवी वाघरी समुदाय की पारम्परिक कला है। देवीपूजक यह समुदाय खानाबदोश है। पछेड़ी की मांग मुख्यत: नवरात्रा में रहती है। अनुष्ठान के समय इसे काम में लिया जाता है।

वीरचन्द मेहता नहीं रहे

उदयपुर (का.सं.)। उदयपुर के समाज-शिक्षण में छह दशकों तक सक्रिय रहे वीरचन्द मेहता का 17 जुलाई 2020 को 81 वर्ष की उम्र में निधन हो गया। महावीर विद्या मन्दिर के अन्तर्गत उन्होंने उदयपुर में तीन विद्यालय तथा फतहनगर में महाविद्यालय की स्थापना की। डॉ. देव कोठारी विद्या मन्दिर की स्थापना से लेकर 39 वर्ष तक अध्यक्ष रहे।

सातवें दशक के दौरान उन्होंने अपने तीन अनन्य साथियों श्रीकृष्ण शर्मा, विजय कुलश्रेष्ठ तथा चन्दन जोशी के साथ कलालोक संस्था की शुरूआत कर उदयपुर में साहित्यिक एवं सांस्कृतिक आयोजनों में उल्लेखनीय हलचल दी। तब मोहनसिंह मेहता, पं. जनार्दनराय नागर, देवीलाल सामर, डॉ. देवराज उपाध्याय, डॉ. रामगोपाल शर्मा 'दिनेश', प्रभृति शिक्षा-संस्कृतिविज्ञों की प्रेरणा, मार्गदर्शन तथा प्रश्रय में कलालोक ने भारतीय लोककला मण्डल, श्रमजीवी कॉलेज तथा विश्वविद्यालय में नामचीन आयोजन किये।

कलालोक के अध्यक्ष रहे श्रीकृष्ण शर्मा बाद में जयपुर चले गये। उन्होंने वहां शब्द संसार नामक संस्था स्थापित की जिसके माध्यम से वे निरन्तर साहित्यिक आयोजनों की स्वस्थ परम्परा निभाते सुजस लिए हैं।

डॉ. महेन्द्र भानावत तो अन्तिम समय तक मेहताजी से जुड़े रहे। मेहताजी बड़े संघर्षशील, जुझारू, कर्मठ हौंसलेबाज, धुन के धनी तथा साकार स्वप्नदर्शी थे। वे यदाकदा डॉ. भानावतजी से मिलने आते रहते तब तुक्ततजी से कईबार उन्होंने शहर में कुछ नया सार्थक काम करने की इच्छा जाहिर की लेकिन धीरे-धीरे उनका स्वास्थ्य गिरता गया जिससे उनकी हलनचलन बाधक बनी। उनके दुखद निधन पर 'शब्द रंजन' की शोकांजलि।

हर्षोल्लास से मनाया श्रीकल्लाजी का जन्मोत्सव

उदयपुर (विज्ञप्ति)। मेवाड़ी सार्वभौमिकता रक्षार्थ अपना सर्वस्व न्यौछावर करने वाले लोकदेवता शेषावतार श्रीकल्लाजी महाराज का पावन जन्म कल्याणक महोत्सव श्रावण शुक्ल अष्टमी 27 जुलाई को श्री कल्याणधाम, हाथीपोल में हर्षोल्लास से मनाया गया।

गादीपति महंत अशोक परिहार ने बताया कि प्रात: विभिन्न पवित्र नदियों के जल एवं एकादश सुगन्धित द्रव्यों से ठाकुरजी की स्नान-पूजा सम्पन्न होने के बाद पण्डित महेश दवे के आचार्यत्व में विद्वतजन ने शिव कल्याण रुद्राभिषेक, दुर्गा सप्तशती, कमधज चालीसा एवं अष्टक पारायण किया। दोपहर में ढोल नगाड़ों की गूंज व आतिशबाजी के बीच जन्मोत्सव की महाआरती तथा ध्वजारोहण किया गया। रात्रि में दाताश्री का दरीखाना जुड़ा जिसमें केसर कसुंबा व नज़राना की रस्म अदायगी हुई व मिल्क केक काटा गया। सर्व मंगल मांगल्य की कामना एवं कोविड 19 की समाप्ति हेतु विशेष जप-अनुष्ठान भी किया गया। सभी कार्यक्रम राजकीय नियमानुसार किये गये। स्थानक पर गुब्बारों, फूलों एवं रंग बिरंगी लाइटों से भव्य विद्युत सज्जा की गई।

उदयपुर से राम मंदिर के लिए पहली चांदी की ईंट अर्पित

उदयपुर (विज्ञप्ति)। अयोध्या में जन्मभूमि पर श्री रामलला के बन रहे भव्य मंदिर के लिए उदयपुर से पहली चांदी की ईंट 'राम काज' में समर्पित की गई। सुभाषनगर निवासी मूंदड़ा परिवार की ओर से यह शिला विश्व हिन्दू परिषद के पदाधिकारियों को सौंपी गई।

विहिप के उदयपुर महानगर मंत्री अशोककुमार प्रजापत ने बताया कि सुभाषनगर निवासी श्रीमती रामकन्या, रामजस मूंदड़ा की ओर से एक किलो की चांदी की शिला भगवान श्रीराम के मंदिर निर्माण के लिए अर्पित की गई। इस अवसर पर श्रीमती अलका मूंदड़ा, सुशील मूंदड़ा, राकेश मूंदड़ा, संगीता मूंदड़ा, भाजपा के पूर्व जिलाध्यक्ष दिनेश भट्ट, नगर निगम गैराज समिति अध्यक्ष मनोहर चौधरी, वरिष्ठ अधिवक्ता दिनेश गुप्ता तथा अशोक सिंघवी मौजूद थे।

'एवीटीआर' ग्राहकों को डीलिवर

उदयपुर (विज्ञप्ति)। हिंदुजा ग्रुप की मशहूर कंपनी और भारत के प्रमुख वाणिज्यिक वाहन निर्माता, अशोक लेलैंड, मॉड्युलर ट्रक्स की अपनी नवीनतम रेंज 'एवीटीआर' की 1350 से अधिक गाड़ियां देशभर में डीलिवर कर चुका है। उदयपुर में कंपनी ने i-Gen6 BS-VI तकनीक युक्त एवीटीआर को लॉन्च किया। इस मौके पर अशोक लेलैंड के सीओओ, अनुज कथूरिया और डीलर्स परिवार मौजूद रहा। उन्होंने ग्राहकों को ट्रकें सौंपी।

अनुज कथूरिया ने बताया कि हमारे ट्रक्स की एवीटीआर रेंज ग्राहकों को नवीनतम तकनीक एवं नवाचार प्रदान करती है। हमारी अर्थव्यवस्था धीरे-धीरे रफ्तार पकड़ रही है और कारोबार सामान्य हो रहे है, ऐसे में ये ट्रक्स सामानों को ढोने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायेंगे। अशोक लेलैंड के 'एवीटीआर' ट्रक्स की सात डिजाइन पेटेंट्स हैं। ये ट्रक्स मॉड्युलर प्लेटफॉर्म पर बनी हैं और इनमें क्षमतावान इंजन लगा हुआ है, जो कि भारतीय वाणिज्यिक वाहन उद्योग में अपने तरह का पहला इंजन है। इन ट्रकों की 18.5 टन से लेकर 55 टन तक की श्रेणी के हैवी कॉमर्शियल व्हीकल्स की समूची रेंज के लिए एक ही प्लेटफॉर्म पर एक्सल कॉन्फिग्युरेशंस, लोडिंग स्पैन्स, केबिन्स, सस्पेंशंस व ड्राइवट्रेन्स के कई विकल्प हैं।

कोरोना की आहें पर आत्मावलोकन से खुलेंगी कई राहें

- सावनकुमार दोसी -

कोरोना ..... शब्द में ही रोना छिपा है, इसने पूरी दुनिया की आँखों को वह मंजर दिखा दिया है जिसकी किसी ने कल्पना भी नहीं की थी। इस महामारी ने ऐसी तबाही मचायी है जिससे दुनिया की बड़ी- बड़ी ताकतों को यह आभास हो गया है कि विश्व शक्ति बनने से ज्यादा जरूरी है विश्व मर्सी (दया)। इस समय अणु-परमाणु कुछ काम नहीं आए। काम आयी तो मानवीयता और वह इंसानी शक्तियां जिन्होंने स्वहित से ऊपर उठकर जनसेवा को प्रधान माना।

कोई भी वैश्विक आपदा कोरोना से अधिक गंभीर नहीं रही होगी। इस बार संकट इसलिए भी बड़ा है क्योंकि शत्रु अदृश्य है। बेशक कई जानें गयीं। हजारों परिवार बेघर हो गये। असंख्य लोगों के रोटी के लाले पड़ गये और कइयों की नौकरी गयी बावजूद इसके कोरोना ने हमारी जीवनशैली, देखने के नजरिए में बड़ा सकारात्मक परिवर्तन किया है।

कोरोनाकाल ने यह स्पष्ट कर दिया है कि जीवन में कुछ भी स्थायी नहीं है। तीन-चार महीने पहले तक जो बड़ी-बड़ी कम्पनियाँ अरबों रूपये कमाकर देने वाले अपने कर्मचारियों को सबसे महत्वपूर्ण मान रही थी वही अब कर्मचारियों को सेवामुक्त कर रही है। कुछ को बहाना मिला और कुछ पर वाकई आर्थिक संकट गहराया है। ऐसे में कर्मचारियों को यह समझ में आ गया है कि नौकरी किसी भी स्तर की क्यों न हो साथ में एक विकल्प हमेशा तैयार होना चाहिए ताकि मुसीबत में काम में लिया जा सके।

दुनियाभर में लॉकलाडन के कारण अपना घर-परिवार छोड़ कर बाहर नौकरी व काम-धंधा करने वालों के सामने बड़ी समस्या है। ऐसे में उनके मन मस्तिष्क में यह बात बैठ गयी है कि जब समय खराब होता है तब बड़े शहर किसी काम के नहीं बल्कि अपने लोग और अपना गांव की काम आता है। मजदूर से लेकर इंजीनियर, सीए और मैनेजमेंट से जुड़े कर्मचारी अपने क्षेत्र में काम करेंगे तो उनके काम की प्रशंसा होगी और सही मूल्यांकन भी हो पाएगा।

कोरोनाकाल में सारे अच्छे सम्बन्ध धरे के धरे रह गये। जरूरत में वही पड़ौसी काम आया जिससे कभी सीधे मुंह बात भी नहीं की थी। जिन लोगों के अपने पड़ौसियों के साथ अच्छे संबंध नहीं हैं वे भविष्य में उनसे मधुर संबंध रखने की कोशिश करेंगे।

कोरोना वायरस मानव के लालच, तिल का ताड़ करने वाले स्वभाव की तरह खत्म नहीं होने वाली बीमारी है। इससे लोगों को स्वयं को जानने का अवसर मिला है जिससे वे अपनी खूबियों और खामियों का अवलोकन कर स्वयं में निखार लाएं। जनजीवन सामान्य होने पर व्यक्ति के आचार-विचार, कुशलता में बड़ा परिवर्तन देखने को मिलेगा जो उनके करियर को ऊंचाइयां छूने, समाज में प्रतिष्ठा बढ़ाने व दोस्तों में छवि बदलने में कारगर साबित होगा।

कोरोना से पहले दुनिया की ज्यादातर आबादी को यह लगता था कि घर पर तो सिर्फ आराम होता है। काम के लिए घर से बाहर जाना या घर छोड़ना पड़ता है लेकिन इस आपदा ने अवसर की राह दिखा दी है। ज्यादातर लोग घर बैठे बिना तनाव के अधिक प्रभावी होकर काम कर रहे हैं। कोरोनाकाल के बाद में ऑफिस कार्य समय के अलावा घर बैठे काम कर अन्य आय अर्जित कर सकते हैं। वर्क फ्रोम होम का कल्चर भविष्य में नयी संभावनाएं लेकर आएगा।

ऑफिस में काम के दौरान तनाव होता है लेकिन लम्बे ब्रेक ने सभी को तरोताजा कर दिया है। नये विश्वास, आत्मविश्वास और नवाचार से कार्य को गति मिलने लगी है।

जिन लोगों की नौकरी संकट में है या फिर उच्च पढ़ाई के बाद अच्छी नौकरी की उम्मीद नहीं है उनका किसी मालिक या कम्पनी के भरोसे नहीं रहकर आत्मनिर्भर बनने का अवसर सुलभ होगा।

समय ने ऐसा पलटा मारा कि धन फिसल पर प्राथमिकता के सबसे अंतिम पायदान पर पहुंच गया है। इससे बाहर आने के बाद हर कोई अपने स्वास्थ्य को लेकर जागरूक नजर आएगा। सभी को सबक मिला है कि सुस्वास्थ्य से मेहनत कर कमायी गयी पूंजी ही फलीभूत होती है।

विदेशों में घूमने वालों को खुशी और सूकुन मिला है कि काम सिर्फ आजिविका का साधन है। मुख्य ध्येय तो स्वयं और परिवार की रक्षा करना व उसके साथ समय बिताना है।

कोरोना ने बाहर रहने पर ठंडी रोटी व घर में गरमागरम खाना नसीब कराते स्वास्थ्यवर्धक स्वादिष्ट व्यंजनों का मौका दिया है। इससे पता भी चला कि असली स्वाद परिवार के साथ ही मिलता है। अच्दा है, बाहर के जंकफुड तथा खराब तेल में बनी कचोरी, समोसे, हानिकारक पानी पुरी जैसे खानपान से मुक्ति मिली है।

जिन लोगों को यह लगता था कि शराब व धूम्रपान के बिना जिंदा रहना मुश्किल है उन्हें यह समझ में आ गया कि इनसे दूरी बनायी जा सकती है। उनके लिए ऐसी कुटेव छोड़ना छोड़ना आसान हो गया है साथ ही शौक के नाम पर फिजुलखर्ची कम हुई है और आगे काम आने के लिए बचत संग्रह हुई है।

आमतौर पर पुरूषों को यह लगता है महिलाओं के पास घर की सफाई व खाना बनाने के अलावा कोई काम नहीं होता है लेकिन लम्बे समय तक पत्नी, माँ और बहन के साथ रहने पर यह साफ हो गया है कि महिलाएं पुरूषों की तुलना में अधिक काम, समय पर और पूरी निष्ठा के साथ करती हैं। पति-पत्नी एक ही गाड़ी के पहिए हैं। दोनों की अपनी महत्ता है।

दिखावा अब जीवन का हिस्सा नहीं रहा। कम खर्चे में अच्छा व आदर्श जीवन व्यतीत किया जा सकता है। स्वदेशी व स्थानीय वस्तुओं के इस्तेमाल की आदत बढ़ने से जरूरतमंद को रोजगार मिलेगा व खर्च भी कम होगा।

अर्थव्यवस्था के अस्तव्यस्त चलते जरूरी सामान के अलावा किसी भी दुकान पर ग्राहक नहीं है। सरकार का आमदनी का साधन घट गया है। आयात-निर्यात बंद है। अर्थव्यवस्था अचानक से सुदृढ़ नहीं होगी। ऐसी स्थिति में पटरी पर लाने का यह शुभ अवसर है। जहाँ आय का मुख्य साधन पर्यटन है उन्हें सर्वाधिक हानि हुई है।

कोरोना के कारण सबसे बड़ा लाभ पर्यावरण को हुआ है। ऑक्सीजन के मुख्य स्त्रोत वनों की अंधाधुंध कटाई रूक गयी है वहीं जल व पर्यावरण प्रदूषण रूक गया है। शोर-शराबा शांति में बदल गया है।

दुनिया में जिस गति से प्रकृति से छेड़छाड़, प्रदूषण, पानी की कमी और वायरसों का अटेक हो रहा है ऐसे में हमारे समक्ष जो चुनौती आन पड़ी है उसका बहादुरी, पराक्रम तथा पुरुषार्थ के साथ मुकाबला करें।

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने बहुत पहले भारत-वन्दना करते हुए लिखा था। आइये हम भी उनके स्वर में अपना स्वर दें-

जय-जय भारतमाता
तेरा बाहर ही घर जैसा रहा प्यार ही पाता।
तेरे प्यारे बच्चे हम सब,
बंधन में बहुबार पड़े।
किंतु मुक्ति के लिए यहां हम,
कहां न जूझे कब न लड़े।।
मरण शांति की दाता है तू
जीवन क्रांति विधाता।
जय-जय भारतमाता।

खोज-खबर

पाडुलिपियों की वसीयत

उन्होंने मृत्यु पूर्व अपने भरेपूरे परिवार के सदस्यों, समधियों और इष्ट मित्रों से क्षमायाचना की और कहा अब मेरा समय निकट है। अपने जीवन में जो कुछ किया उसका मुझे पूरा-पूरा संतोष है।

बस, एक ही इच्छा है कि मेरी शवयात्रा के साथ मेरे द्वारा लिखित पोथियों की पोटली भी साथ चले और अंत में उसे भी अग्नि-मुख दे दी जाय। यह सुन सभी अवाक् रह गए।

ऐसा नहीं था कि उन्हें प्रकाशकों से निराशा हाथ लगी अथवा कोई पुस्तक नहीं छपी हो। छपास की उन्हें कभी कोई ललक नहीं रही। शायद इसलिए लिख दिया हो कि पीछे से उन पाडुलिपियों को देख कोई किसी तरह परेशान नहीं हो। जैसे जीवन नश्वर है वैसे ही व्यक्ति के चले जाने के बाद उसकी कोई स्मृति रहे, न भी रहे। कोई क्यों उसको स्मृति में बिठाए, सोच करे या अच्छे-बुरे का भाव संजोए।

वे मोहनलाल शास्त्री थे जो हिन्दी, संस्कृत के प्रकांड पंडित तो थे ही, अच्छे कवि, काव्यानुवादक, ज्योतिषी, समाजसुधारक और संगीत मर्मज्ञ भी थे। उनके सुपुत्र डॉ. नरेन्द्र व्यास ने बताया कि वे एमबी कॉलेज में हिंदी व्याख्याता रहे, फिर अजमेर के मेयो कॉलेज में प्राध्यापक बने। वे मुबंई के आनंदीलाल पोद्दार हाईस्कूल में मुख्य पंडित रहे और अंत में उदयपुर आकर राजस्थान विद्यापीठ के साहित्य संस्थान में मंत्री के पद पर कार्य करते रहे।

उनका अनुभव-जगत व्यापक और गहन था। महाराज धर्मपुर ने संगीत भाव नामक उनकी पुस्तक प्रकाशित कराई। फिर उन्होंने संगीत दीपिका लिखी। सुधारवादी दृष्टिकोणपरक हिन्दू समाज का अग्निकुंड नामक पुस्तक भी उन्होंने तैयार की। हस्तरेखा विज्ञान पर भी उन्होंने लिखा। बालबोध व्याकरण नाम से एक सरल पुस्तक भी लिखी लेकिन मेघदूत का काव्यानुवाद कर उन्हें परम संतोष हुआ।

डॉ. व्यास ने बताया कि अंतिम दिनों में वे कैंसर से पीड़ित हो करीब सात माह बिस्तर पर रहे तब हर समय अपने तकिये के नीचे मेघदूत के अनुवाद की कॉपी को ही सम्हाले रहे। वे कहा करते कि इससे मेरी वेदना कम हो रही है। उनका निधन अजमेर में हुआ।

वाणीकार स्वरूप व्यास इन्हीं शास्त्रीजी के पुत्र थे जिन्होंने मुंबई में रह सिनेजगत में बड़ा नाम कमाया। उन्होंने लगभग पांच हजार वृत्तचित्रों में अपनी प्रभावी वाणी दी। अपने पिताश्री की तरह वे भी ज्योतिष के अच्छे जानकार थे।

स्वरूपजी ने मुझे बताया कि मृत्यु के बाद जब उनकी डायरी देखी गई तो उसमें मृत्यु तिथि 22 फरवरी 1962 लिखी मिली। स्थान और समय भी वही मिला। उसी डायरी में लिखे अनुसार उनकी पांडुलिपियों की पोटली शवयात्रा के साथ श्मशान ले जाई गई लेकिन उनके साथ जलाने की बजाय वे बचा ली गईं।

- म. भा.

एचडीएफसी बैंक की नई शाखा का शुभारंभ

उदयपुर (विज्ञप्ति)। एचडीएफसी बैंक की नई शाखा का शहर के हिरन मगरी सेक्टर 4 में शुभारंभ हुआ।

उद्घाटन एचडीएफसी बैंक के ब्रांच बैंकिंग हेड जसमीत आनंद ने दीप प्रज्वलित करने के बाद फीता काटकर किया। इस अवसर पर क्लस्टर हेड राहुल गुप्ता, राजेश भंडारी, देवेन्द्रसिंह, ब्रांच मैनेजर दिलीप जैन, चेतक सर्कल ब्रांच मैनेजर विनीता जैन, हिरन मगरी सेक्टर 11 बीएम विनय पारीख, सुखेर बीएम जगदीश भाटी सहित बैंक स्टाफ मौजूद था। इस शाखा के साथ उदयपुर शहर में एचडीएफसी बैंक की आठ शाखाएं हो गई हैं। बैंक में लोन, डिजिटल बैंकिंग, लॉकर, सेविंग व करंट अकाउंट आदि सुविधाएं सरल कार्यवाही के साथ उपलब्ध होगी। बैंक में एटीएम सुविधा भी ग्राहकों के लिए उपलब्ध है।

वारी को मिला सबसे बड़ा ब्रांड खिताब

उदयपुर (विज्ञप्ति)। भारत के सबसे बडे सोलर मॉड्यूल निर्माता एवं ईपीसी सेगमेंट में अग्रणी वारी एनर्जीज को एशिया वन मैगजीन और यूआरएस मीडिया इंटरनेशनल अवार्ड के पाचवें एडिशन में इण्डियाज ग्रेटेस्ट ब्राण्ड होने के उपाधि दी है। इस अवॉर्ड एवं लिस्टिंग के लिए प्रोसेस एडवाइजरी डेलॉयट टच तोमस्तुए इण्डिया ने की। वारी अब भारत की पहली सोलर कम्पनी बन गई है जिसे 'इण्डियाज ग्रेटेस्ट ब्राण्ड' का खिताब मिला है।

विश्व रिकॉर्ड में आचार्य महाप्रज्ञ का कविता संग्रह

बेंगलुरु (विज्ञप्ति)। तेरापंथ धर्मसंघ के दशमाचार्य आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में उनसे सम्बन्धित 1121 लोगों द्वारा लिखित कविताओं का संकलन ब्रिटिश वर्ल्ड रिकॉर्ड लंदन को भेजा गया।

इसके साथ ही इसे गोल्डन बुक ऑफ़ रिकॉर्ड सुप्रीम वर्ल्ड रिकॉर्ड आदि 27 राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की संस्थाओं के वर्ल्ड रिकॉर्ड में भी शामिल किया गया है। कमल तातेड़ ने बताया कि महाप्रज्ञजी का शताब्दी वर्ष 'ज्ञान चेतना वर्ष' के रूप में मनाया गया। इस संकलन में श्रीमती महिमा पवन पटावरी की कविता चयनित की गई जिसके लिए 'द ब्रिटिश वर्ल्ड रिकॉर्ड' द्वारा उन्हें सर्टिफिकेट देकर सम्मानित किया गया।

अग्रवाल, जोशी निदेशक तथा मिश्रा सीईओ बने

उदयपुर (विज्ञप्ति)। हिन्दुस्तान ज़िंक ने ईवाय के पूर्व वरिष्ठ पार्टनर अंजनी के अग्रवाल

तथा जिंक के पूर्व सीईओ अखिलेश जोशी को कंपनी बोर्ड में निदेशक एवं अरुण मिश्रा को नया मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) बनाया है।

अपनी नियुक्ति पर अंजनी अग्रवाल ने कहा कि निजीकरण के बाद जिंक ने अपनी पहचान एक सफलतम मूल्य सृजन कम्पनी के रूप में बनाई है। निदेशक बोर्ड और प्रबंधन टीम के साथ काम करने के लिए मैं उत्साहित हूं। यहां युवा और प्रतिभाशाली लोग हैं जो कंपनी के सतत् विकास और समस्त अंशधारकों के लाभ के लिए कार्यशील हैं। अखिलेश जोशी ने कहा कि जिंक अपनी सर्वोत्तम विरासत, उत्कृष्ट तकनीक और नवाचार के लिए सदैव अग्रणी रहा है। अरुण मिश्रा ने कहा कि यह मेरे लिए गौरव की बात है कि मैं एक बेहतरीन कॉर्पोरेट लीडर सुनील दुग्गल का स्थान ले रहा हूं जिन्होंने कंपनी का मार्गदर्शन करते हुए उसे इस मुकाम तक पहुंचाया। उसी नज़रिए को आगे बढ़ाने के लिए मैं काम करुंगा।

सुविवि में प्रो अमेरिकासिंह ने कुलपति का कार्यभार सम्भाला

उदयपुर (विज्ञप्ति)। लखनऊ के इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एवं टेक्नोलॉजी के डीन रहे प्रोफ़ेसर अमेरिका सिंह मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के नए कुलपति बनाये गए। विवि के प्रवक्ता डॉ. कुंजन आचार्य ने बताया कि प्रो. सिंह ने अपनी विभिन्न प्राथमिकताओं की चर्चा करते कहा कि स्नातकोत्तर के विद्यार्थियों से वे स्वयं ऑनलाइन संवाद करेंगे और उनके इनोवेटिव आईडियाज को जानेंगे। परीक्षाओं को और अधिक पारदर्शी बनाना उनकी प्राथमिकता रहेगी और कोरोना काल को देखते हुए परीक्षाओं को भी ऑनलाइन करवाने पर जोर रहेगा। प्रो. सिंह ने कहा कि कोरोना काल में आर्थिक संकट भी बढ़ा है। ऐसे में विद्यार्थियों से एक मुश्त फीस ना

लेकर किश्तों में लेने की व्यवस्था की जाएगी, ताकि छात्रों पर अनावश्यक बोझ ना बढ़े।

उन्होंने जोर दिया कि कॉरपोरेट सोशल रिस्पांसिबिलिटी के तहत यदि कोई कॉरपोरेट संस्थान विद्यार्थियों की फीस जमा करने में रूचि दिखाएगा तो छात्र-हित में ऐसे संस्थानों से संपर्क किया जाएगा। जनजाति के विद्यार्थियों को तकनीकी और रोजगारपरक पाठ्यक्रमों से जोड़ा जाएगा और उनके प्लेसमेंट के लिए पूरी कोशिश की जाएगी। संबद्ध महाविद्यालयों में शिक्षण कार्य सुचारु और गुणवत्तापूर्ण हो इसके लिए नियमित मोनिटरिंग की जाएगी। साथ ही सोशल डिस्टेंस गाइडलाइंस की पालन करते हुए वे विद्यार्थियों, शिक्षकों और कर्मचारियों से मुलाकात के लिए सदैव उपलब्ध रहेंगे। उन्होंने बताया कि वे मूलत: जोधपुर के निवासी हैं। 11 पीढ़ी पहले उनके पूर्वज लखनऊ बस गए थे।

एचडीएफसी बैंक के शुद्ध लाभ में 19.6 प्रतिशत की बढ़ोतरी

उदयपुर (विज्ञप्ति)। एचडीएफसी बैंक का चालू वित्त वर्ष की अप्रेल-जून तिमाही का एकल शुद्ध लाभ 19.6 प्रतिशत बढ़कर 6658.62 करोड़ रुपए पर पहुंच गया। देश के निजी क्षेत्र के सबसे बड़े बैंक ने पिछले वित्त वर्ष की समान तिमाही में 5568.16 करोड़ रुपए का शुद्ध लाभ कमाया था। शेयर बाजारों को भेजी सूचना में बैंक ने कहा कि तिमाही के दौरान उसकी आय बढ़कर 34,453.28 करोड़ रुपए पर पहुंच गई। संपत्ति के मोर्चे पर बैंक की सकल गैर निष्पादित आस्तियां 30 घटकर 1.36 प्रतिशत रह गई। मूल्य के हिसाब से बैंक का सकल एनपीए या डूबा कर्ज 13,773.46 करोड़ रुपए रहा जो पिछले वित्त वर्ष की समान तिमाही में 11,768.95 करोड़ रुपए था। इसी तरह बैंक का शुद्ध एनपीए घटकर 0.33 प्रतिशत आ गया जो गत वर्ष 0.43 प्रतिशत था। तिमाही के दौरान बैंक का डूबे कर्ज और अन्य आकस्मिक खर्च के लिए प्रावधान बढ़कर 3891.52 करोड़ रुपए पर पहुंच गया, जो पिछले वित्त वर्ष की समान तिमाही में 2613.66 करोड़ रुपए था। एकीकृत आधार पर बैंक का शुद्ध लाभ 22 प्रतिशत बढ़कर 6927.24 करोड़ रुपए पहुंच गया जो पिछले वित्त वर्ष की समान तिमाही में 5676.06 करोड़ रुपए था। तिमाही में बैंक की एकीकृत आय बढ़कर 36,698.59 करोड़ रुपए पर पहुंच गई, जो एक साल पहले 34,324.45 करोड़ रुपए रही थी।

टीबी की दवा प्रेटोमानीड को डीसीजीआई की मंजूरी

उदयपुर (विज्ञप्ति)। दवा कम्पनी मायलन ने टीबी की रोकथाम की दवा प्रेटोमानीड को भारतीय औषधि महानियंत्रक (डीसीजीआई) से मंजूरी मिलने की घोषणा की। यह दवा राष्ट्रीय क्षय रोग उन्मूलन कार्यक्रम (एनटीईपी) के तहत सशर्त उपयोग के लिए उपलब्ध होगी।

मायलन के अध्यक्ष राजीव मलिक ने कहा कि भारत इस दवा के लिए नियामक मंजूरी देने वाला दूसरा देश होगा। प्रेटोमानीड को तीन-दवा के तहत, सभी छह-महीने की मौखिक खुराक के लिए मंजूरी दी गई है। कुछ मामलों में इलाज बढ़ा कर नौ महीने करने का विकल्प होगा। इन दवाओं में बेडाक्वीलाइन, प्रेटोमानीड और लाइनजोलीड शामिल हैं, जिन्हें सामूहिक रूप से 'बीपीएएल' कहा जाता है। इसका उपयोग वयस्क रोगियों के फेफड़े के बड़े हिस्से में ड्रग-रेसिस्टेंट टीबी (एक्सडीआर-टीबी), मल्टीड्रग-रेसिस्टेंट टीबी (एमडीआर-टीबी) के मरीज़ों के लिए होगा जो या तो सामान्य उपचार सह नहीं पाते या फिर उपचार का असर नहीं होता। मायलन भारत सरकार के राष्ट्रीय क्षय रोग उन्मूलन कार्यक्रम (एनटीईपी) के तहत इलाज के प्रेटोमानीड के 400 कोर्स का योगदान देगी। इस कार्यक्रम के तहत पूरे देश में टीबी की उच्च गुणवत्ता दवा और इलाज की नि:शुल्क व्यवस्था की गई है ताकि अधिक से अधिक ज़रूरतमंद मरीज़ों का इलाज सुनिश्चित किया जाए। हमने टीबी अलायंस जैसी नई साझेदारी करने की क्षमता का प्रदर्शन किया है। इससे अधिक से अधिक मरीजों तक नई दवा पहुंचेगी।

प्राइम डे 2020 की घोषणा

उदयपुर (विज्ञप्ति)। अमेजन अपने चौथे साल में प्राइम डे की शुरुआत 6 अगस्त मध्यरात्रि से करेगी जो 48 घंटे तक चलेगा। इसमें मेम्बर्स को पूरे दो दिन तक उनके घर पर ही आराम और सुरक्षा के साथ बेहतरीन शॉपिंग, सेविंग्स और ब्लॉकबस्टर एंटरटेनमेंट की पेशकश की जाएगी। अमेजन इंडिया के सीनियर वाइस प्रेसीडेंट और कंट्री मैनेजर अमित अग्रवाल ने कहा कि इस प्राइम डे पर, हजारों लघु एवं मध्यम उद्यम प्राइम मेम्बर्स को विशिष्ट उत्पादों की पेशकश करेंगे। लोकल शॉप, अमेजन लॉन्च पैड, अमेजन सहेली और अमेजन कारीगर के तहत हजारों अमेजन विक्रेताओं के उत्पादों को देखने और खरीदने का अवसर होगा।

प्रो. भाणावत लेखा एवं व्यावसायिक सांख्यिकी विभाग के अध्यक्ष नियुक्त

उदयपुर (विज्ञप्ति)। मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. अमेरिकासिंह ने प्रो. शूरवीरसिंह भाणावत को लेखा एवं व्यावसायिक सांख्यिकी विभाग का विभागाध्यक्ष नियुक्त किया है।

इससे पूर्व प्रो. भाणावत वर्ष 2014 से 2017 तक विभाग के अध्यक्ष रह चुके हैं। उनके अब तक 45 रिसर्च पेपर राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय जनरल्स में प्रकाशित हुए हैं। उनमें से आठ रिसर्च पेपर को बेस्ट पेपर अवार्ड से नवाजा गया है। लगभग 15 पॉपुलर आर्टिकल्स विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए। उन्होंने कार्बन टैक्सेशन के ऊपर एक रिसर्च प्रोजेक्ट हाल ही में संपन्न किया है। वे अभी ब्लॉक चैन अकाउंटिंग पर रिसर्च कर रहे है। लागत लेखांकन एवं व्यावसायिक सांख्यिकी विषय के पुस्तकों के लेखक के साथ राष्ट्रीय लेखांकन टैलेंट सर्च के राष्ट्रीय संयोजक, भारतीय लेखा परिषद उदयपुर शाखा के सचिव तथा बेचलर ऑफ वोकेशन (अकाउंटिंग, टैक्सेशन एवं ऑडिटिंग) प्रोग्राम के कन्वीनर भी हैं।

अद्‌भुत, अचूक.....

(पृष्ठ तीन का शेष)

उन्होंने बताया कि एकबार उदयपुर से रतनगढ़ की खेड़ी चलते बीच रास्ते में दो आदमियों को पटाखों की दो पेटियां दे रखी थीं। उनमें तीन-तीन सौ पटाखे थे। अचानक एक को ठोकर लगी जिससे पेटी जमीन पर गिरी और सारे के सारे पटाखे छूट पड़े। इससे दूसरी पेटी वाला भी गिर पड़ा। उसकी पेटी ने भी आग पकड़ ली। जोर के धमाके में दोनों आदमी ऐसे उड़े कि उनकी हड्डियों तक का पता नहीं चला।

दूसरी घटना नाहर मगरे में घटी। वहां महाराणा भूपालसिंहजी का कैम्प लगा। एक डेरे में रखे पटाखे अचानक जल उठे। वहां एक आदमी था, उसका पता ही नहीं लगा। इस डेरे के पास में एक डेरा और था। उसमें बैठा पुलिस जमादार जल गया और अंधा हो गया। उसके पास ही कामदार का एक आठ वर्षीय बालक था। उसका तो सारा शरीर ही क्षत-विक्षत हो गया।

यह तो बाहर जंगल की बात हुई मगर एकबार राजमहलों में ही बड़ा चौक के पास पुलिस क्वार्टर में रखे पटाखे चल पड़े जिससे पासवाली भारी व मजबूत दो मंजिली इमारत गिर पड़ी। उसमें पुलिस का एक सिपाही दब गया। जमादार चतरभुज उड़कर बाहर जा गिरा। उधर से निकला एक आदमी जल गया। एक और आदमी जो आ रहा था उसकी आंख फूट गई। इससे पता चलता है कि हर पल, पल-पल, बड़ी ही सावधानी की जरूरत रहती है।

अपने साठ वर्षीय लम्बे शिकारी जीवन में तुलसीनाथजी को कई बार मौत का सामना करना पड़ा मगर उन्होंने कभी हिम्मत नहीं हारी। कइयों को उन्होंने बुरी तरह अपने सामने मरते, तड़पते, कराहते देखा मगर ऊपरवाले ने हमेशा उनकी लाज रखी और जो काम दूसरों से नहीं हो सका वह उन्होंने करके दिखाया। परीक्षा की हर घड़ी में वे सफल हुए। ऐसी कई रोमांचक घटनाएं उनके साथ घटीं जिन्हें सुनकर रौंगटे खड़े हो जाते हैं। दो-एक घटनाएं यहां प्रस्तुत हैं, तुलसीनाथजी के ही शब्दों में-

''महाराणा भूपालसिंहजी चित्तौड़ के सुखझर नामी शिकारगाह में शिकार के लिए पधारे। कोई 50 गज दूर शेर था कि उन्होंने गोली चलाई जिससे शेर गिर गया और गिरते ही तुरन्त उठकर हाके की तरफ चला गया। हाके के आगे हमारे हाथी चल रहे थे सो भागकर वह हाथियों की तरफ आया तो हमने उसको वापस घेरना शुरू किया।

जब शेर किसी प्रकार आगे न बढ़ सका तो महाराणा साहब ने उसका काम तमाम करने का हुकम दिया। हुकम सुन हम सभी शिकारियों ने उस पर हमला बोल दिया। शेर गरजकर हमारी तरफ झपटा कि शिकारी चिम्मनसिंहजी ने गोली चलादी। इससे शेर नीचे जा गिरा। हम बड़े खुश हुए और अपने-अपने हाथियों सहित उसके इर्दगिर्द गोलाकार बंधन बना खड़े हो गए। कुछ हाथी डरपोक थे। उनका डर दूर करने के लिए फौजदार उन्हें शेर की लाश के पास ले जाते थे परन्तु हाथी थे कि चिंघाड़ते हुए दूर भागे जा रहे थे।

इतने में पहाड़ के ऊपर से देवीलाल ने एक गोली और मारने की आवाज दी। हममें से कुछ लोग गोली लगाने को तैयार हुए तो गम्भीरसिंह बोला-'क्यों खाल खराब करते हो, शेर तो मर ही गया है।' उसकी बात पूरी होते ही अचानक शेर उठ बैठा। हाथियों की तरफ देखा और जोर की गर्जना कर भाग गया। इससे डरपोक हाथी चिंघाड़ने लगे और उन्होंने अपना रास्ता नापा। शेर को ढूंढ़ने की बहुत कोशिश की मगर सब व्यर्थ रहा। इधर संध्या हो गई अत: सब कैम्प की ओर चल पड़े।

दूसरे दिन सुबह जल्दी टोंकिये बिठा दिये गये। एक टोंकिये ने शेर को छज्जेनुमा चट्टान की छाया में बैठा देखा तब मैं और बालकृष्णजी जहां शेर का दिखाई देना बताया वहां पहुंचे। हमने देखा कि शेर अपना बांया पंजा दांये पंजे पर रखकर बड़ी मौज से उन हाथियों और आदमियों को देख रहा है जो दूर खादरे में उसे रोकने के लिए खड़े हैं परन्तु शेर पूरा नहीं दिखाई देकर केवल उसकी नाक, मूछों के बाल और पंजे ही दिखाई दे रहे थे इसलिए गोली चलाने में कठिनाई महसूस हो रही थी।

बालकृष्णजी बन्दूक के कारतूस पलटने लगे कि उनकी आवाज सुनते ही शेर डकार कर नीचे की तरफ दौड़ा और चट्टानों व झाड़ियों में कूदता हुआ कोई पांच सौ गज दूर खड़े मदनसूरत नामक हाथी का मस्तक जा पकड़ा तब हाथी ने जोर का झटका मारा जिससे शेर दूर जा गिरा परन्तु उसी क्षण उठा और भागता बना। शाम तक शेर को मारने का प्रयत्न करते रहे पर वह कहीं हाथ नहीं आया। निराश हो सब कैम्प को लौट चले।

सुबह खबर मिली कि उसी शेर ने उसी जगह पर एक भैंसा मारा और उसे खा-पीकर मगरे के ऊपर हो झालरबाण नामी मगरे में जा पहुंचा। महाराणा साहब तो शिकार के लिए हथणीनामी शिकारगाह में पधारे और उस जख्मी शेर के शिकार के लिए कुछ नौकरियों के साथ देवीलालजी व गम्भीरसिंहजी को भेज दिया।

इन बन्दूकचियों ने पांच-पांच, सात-सात आदमियों का झुण्ड बनाकर शेर को घेरना शुरू किया। जब ये लोग उसके करीब पहुंचे तो शेर झाड़ी से झपटा मार झुण्ड में आ गिरा। इतने में आगेवान ने बन्दूक चलाई मगर वह निष्फल रही। मौका पाकर शेर ने आगेवान को जा दबोचा।

जयसमुद्र की शिकारगाह में महाराणा ने कई हाके दिलवाये पर शेर पकड़ में नहीं आया। यह शेर बड़ा चालाक था। जंगल में जहां कहीं संकड़ी जगह, झाड़ी, पेड़ अधिक होते कि वह उन्हीं को पिंजरा समझ उनसे दूर निकल जाता। एक रात उसने पाड़ा मारा तब तीन सौ के करीब शिकारी, हाके वाले और सहायक चुपचाप वहां पहुंच गए और चारोंओर से उस स्थान को घेर लिया। खास-खास जगह गैस लाइटें भी लगादीं। रातभर शेर को रोके रखा पर सुबह थोड़ी सी गलती से शेर भाग निकला। दूसरे दिन फिर शेर का पता लगा कि कुंडालिया नामी शिकारगाह पर उसने पाड़ा मारा है। महाराणा साहब पहुंचे। मूल पर बिराजे। हाका लगाया पर कहीं शेर का पता नहीं लगा तब शिकारी एक-दूसरे का मुंह देखने लगे।

इन मगरों में मैं पचासों बार घूम चुका हूं इसलिए इधर का हर मथारा, खादरा, घाटी, खाई, पेड़, पौधा तथा पत्थर मेरा परिचित है। कहां रास्ता है, कितने रास्ते किधर से फटते हैं, कहां रास्ता बन्द है, सब मेरी जानकारी में है। इसलिए मैंने अन्दाज लगा लिया कि शेर कहां हो सकता है।

मैंने महाराणा साहब से निवेदन किया। एक सौ आदमी तैयार किये और रात को तीन बजे मनियोल के मथारे पहुंचे। नीचे बागदड़ा के खादरे में पाड़ा बांध दिया। इतने में शेर वहां पहुंचा। उसने पाड़ा मारा और ऊपर का रास्ता लिया। मैंने सब ओर आदमी बिठा दिये अत: शेर वापस नहीं लौटा जहां पाड़ा मारा था। वहां बैठे टोकिये ने हैल्युग्राफ के जरिये खबर दी कि शेर मौजूद है तब तक काफी दिन चढ़ चुका था। मैं तत्काल ऊपर मनियोल के मथारे पहुंचा और हाके का प्रबन्ध किया।

हाका प्रारम्भ हुआ तो शेर हाका फाड़ ऊपर चढ़ा। हमने खाली बन्दूकें व पटाखे चलाये तो वह नीचे उतर चट्टान की आड़ में जा दुबका। महाराणा साहब को उसके पास के कउचिया मगरे के मूल पर बिठाया गया। शेर को उठाने को जब पटाखे फैंके तो एक पटाखे ने आग पकड़ली। हवा इतनी तेज चल रही थी कि हमारे चारोंओर आग फैल गई। भागना मुश्किल होगया। आग की तेजी को देख शेर वहां से भागा और कउचिया के मूल के नीचे झाड़ी में जा घुसा। हमने हाथियों से उसे घेरना शुरू किया तो वह ऊपर की खादरी में जा घुसा। हम करीब एक हजार आदमी थे। रात भर सब मगरे की परिक्रमा लगाते रहे।

सुबह हाका हुआ तो शेरनी सामने आई। उसके गोली लगी तो वह जख्मी होकर झाड़ी में जा दबी। इधर पटाखों ने आग पकड़ी जो मूल के चारोंओर फैल गई। जख्मी शेरनी मारी गई पर शेर की चिंता बढ़ गई। उसके लिए घेरा बांधा गया। इतने में वह पास वाली झाड़ी में जा घुसा। हाथियों ने पास जाकर ललकारा तो गरजकर दौड़ा जिससे महावत दौलतसिंह इतना घबरा गया कि उसके हाथ से बन्दूक जमीन पर जा गिरी।

फिर हाका हुआ। शेर उठा और वहां से भागता बना। उस भागते शेर के अमरसिंह, चुन्नीलाल व मैंने गोलियां दागीं जिससे वह वहीं ढेर हो गया। देखने पर पता चला कि उसकी कलाई टूट कर जुड़ी हुई थी। नौ फीट नौ इंच लम्बा वह शेर इतना खौफनाक था कि उसके द्वारा सात आदमी मारे गये। 52 पाडों को वह पहले ही खत्म कर चुका था। जंगली जानवर और गांवों के मवेशी तो उसने इतने अधिक मारे कि उनकी गिनती ही नहीं। उसे मारने के लिए 32 हाके दिलवाये गये। पूरे पांच वर्ष तक उसे मारने के प्रयत्न होते रहे पर वह किसी से नहीं मरा।''

चित्तौड़ के हथणी मूल में धायभाईजी की गोली से शेर जख्मी हो भंवर खोला नामी खादरे में चला गया। बड़ी मुश्किल से उधर हाथी को बढ़ाया तब शेर ऐसा लपका कि उसका पिछला पांव हाथी के दांत पर, अगला हाथ मस्तक पर और एक हाथ ने महावत को जा पकड़ा। धायभाईजी ने साहस और धैर्य के साथ उस शेर को ऐसा मारा कि वह गुड़िन्दे खाने लग गया।

नाहर ने आकाशवाणी केन्द्र के निदेशक का पदभार संभाला

उदयपुर (विज्ञप्ति)। भारतीय प्रसारण सेवा के वरिष्ठ अधिकारी राजेन्द्र नाहर ने

आकाशवाणी उदयपुर एवं डूंगरपुर केन्द्र के निदेशक का कार्यभार ग्रहण किया।

नाहर ने बताया कि जल्द ही आकाशवाणी उदयपुर के स्टूडियो को पूर्ण रूप से स्वचालित किया जाएगा। केन्द्र पर अभिनव एवं रचनात्मक कार्य प्रारम्भ किये जायेंगे जिससे आकाशवाणी केन्द्र उदयपुर को राष्ट्रीय स्तर पर एक आदर्श लोक प्रसारण केन्द्र के रूप में स्थापित किया जा सके। उन्होंने केन्द्र के अधिकारियों को सभी लम्बित कार्य शीघ्र पूर्ण करने के निर्देश देते हुए आकाशवाणी केन्द्रों के लोक प्रसारण सेवा में तत्काल जिम्मेदारी एवं उत्पादकता बढ़ाने पर जोर दिया।

भाणावत राष्ट्रीय निर्णायक बने

उदयपुर (विज्ञप्ति)। करेंसीमेन के नाम से चर्चित उदयपुर के विनय भाणावत को युनिक

वर्ल्ड रिकॉर्ड्स के अध्यक्ष एवं निदेशक सबब्बी मंगल ने राष्ट्रीय निर्णायक पर नियुक्त किया है। मंगल ने बताया कि पूर्व में पश्चिम भारत के मुख्य निर्णायक पद पर कार्य करते हुए विनय भाणावत ने संस्थान की गरिमा एवं मान बढ़ाया है। अत: राष्ट्रीय स्तर की जिम्मेदारी देते हुए राष्ट्रीय निर्णायक नियुक्त किया है।

को-ब्रांडेड कॉन्टैक्टलेस क्रेडिट कार्ड लॉन्च

उदयपुर (विज्ञप्ति)। एसबीआई कार्ड एवं इंडियन रेलवे केटरिंग एंड टूरिज़्म कॉर्पोरेशन लि. (आईआरसीटीसी) ने रूपे प्लेटफॉर्म पर आईआरसीटीसी एसबीआई कार्ड लॉन्च किया।

रूपे प्लेटफॉर्म पर आईआरसीटीसी एसबीआई कार्डधारकों को आईआरसीटीसी की वेबसाईट से की गई एसी1, एसी2, एसी3, एसी सीसी बुकिंग्स पर 10 प्रतिशत तक वैल्यू बैक मिलता है। यह कार्ड 1 प्रतिशत ट्रांज़ैक्शन शुल्क छूट एवं कार्ड का एक्टिवेशन कराने पर 350 बोनस रिवार्ड प्वाईंट देता है। रिवार्ड प्वाईंट्स को आईआरसीटीसी वेबसाईट पर रिडीम कर निशुल्क टिकट लिए जा सकते हैं।

रेलवेज़ एवं वाणिज्य व उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने कहा कि हम प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सपने के अनुरूप, 'मेक इन इंडिया' अभियान के साथ रेलवे को हर क्षेत्र में 'आत्मनिर्भर' बनाने के लिए समर्पित हैं। आईआरसीटीसी-एसबीआई को-ब्रांडेड क्रेडिट कार्ड रेलवे द्वारा किए गए अनेक 'मेक इन इंडिया' प्रयासों में से एक है। पूरे देश को इलेक्ट्रॉनिक पेमेंट करना चाहिए तथा विनिमयों को पेपरलेस बनाना चाहिए। मेरा विश्वास है कि रूपे प्लेटफॉर्म पर आईआरसीटीसी एसबीआई कार्ड समाज के हर वर्ग के बीच सबसे पसंदीदा कार्ड बन जाएगा।

विवाह के विविध संस्कार एवं रीति प्रसंग (7)

पिछले अंक में राजस्थान में प्रचलित विवाह सम्बन्धी विविध संस्कारों एवं लोकाचारों के संबंध में जानकारी प्रस्तुत की गई थी। यहां पढ़िये उससे आगे-

(42) गाली खाना :

विवाह पर आपसी मनोरंजन तथा हंसी दिल्लगी के लिए ब्याईसग्गे को गालियां सुनाई जाती हैं। यही एक अवसर होता है जब वर के पिता-माता अर्थात् ब्याईजी-ब्याणजी को रंजनपरक खोटी-खरी सुनाई जाकर उन्हें आड़े हाथ लिया जाता है। गीतों के माध्यम से दुल्हन की सास को भळावण भी दी जाती है कि नवोढ़ा बहू को भलीप्रकार रखना। गाली मत देना। यह हमारे ताले की कूंची समान प्यारी तथा लाड़ली है। इसे हमने परिवार में सबसे अधिक लाड़-प्यार से रखी है। दुल्हन को वर के ठहराव स्थल डेरे पहुंचाते वक्त की गाली देखिए-

(क)

पांच बरस रा ब्याईजी
अस्सी बरस री घर नार
बालम छोटा सा...
पाणी जावूं तो बालम हठ लागा
म्हनै घड़ल्यौ देईदै म्हारी नार
बालम.....

अर्थात् पांच वर्ष के ब्याई और अस्सी वर्ष की ब्याण। दूल्हा छोटा सा। पानी जाने पर पति ने हठ की, मुझे घड़ा दे दे मेरी नार। दूल्हा छोटा सा।

(ख)

म्हूं आपने पूछूं वेवाइसा
मूछां कांसै बळी
बळी तो थोड़ी नै चरमरी घणी
रंग धोरा लगाई दूं रै
म्हारा बाबूड़ा...

अर्थात् मैं आपसे पूछूं ब्याईजी, आपकी मूछें कैसे जलीं ? जलीं कम, चरमराई अधिक। मजे की झड़ी लगादूं मेरे बाबूड़े ब्याई।

(ग)

मोटी-मोटी पागां बांधै
माइने भरिया गाबा
खरचवा नै कौड़ी न्ही नै
बेटो परणावा नै आगा
रंग धोरा लगाइदो रे.....

अर्थात् बड़ी-बड़ी पगड़ी बांध रखी। उसके भीतर कपड़े-लत्ते भरे हैं। खर्च के लिए कौड़ी नहीं और पुत्र का विवाह करने निकले। मजे की झड़ी लगादूं।

(घ)

वेवाईसा रे हाथ में पांच पछेटा
व्याणसा नै रमणो सीखावे
वेंडी रांड रा .....

अर्थात् ब्याईजी के हाथ में पांच पछटे। ब्याणजी को खेलना सीखा रहे हैं। वेंडी रांड रा शब्द गाली है, मूर्खता का प्रतीक है।

(च)

वेवाईसा रे हाथ में छार्‌यां रा मींगणा
ब्याणसा ने नुगती चखावे वेंडी...
ऊंट रा मींगणा खवावे वेंडी...

अर्थात् ब्याईजी के हाथ में बकरियों के मींगणे (मल), ब्याणजी को नुगती कह चखा रहे हैं। ऊंट के मींगणे बता गुलाब जामुन कह खिला रहे हैं।

(छ)

ओ सासू गाळ मत दीजो
म्हारा ताला माइली कूंची
बाई ने सबसूं राखी ऊंची

अर्थात् ओ सासूजी! मेरी बालकी को गाली मत देना। इसे मैंने ताले के बीच कूंची की भांति बड़े लाड़ प्यार से पाली, सबसे अधिक सवाई मानी।

महिलाएं गालियां गाकर मात्र मनोरंजन ही नहीं करतीं, स्वयं रंजित भी होती हैं और छिपे भावों से यह भी संकेत कर देती हैं कि यदि बाई को ठीक से नहीं रखी तो हम भी आपसे दबने वाली नहीं हैं। मौका आने पर आपकी भी खबर ले लेंगी।

(43) थापा देना :

लड़की की विदाई से पूर्व मुख्य ब्याईजी को सबके प्रतिनिधि के रूप में विदा करने हेतु थापा देने की रस्म निभाई जाती है। इसके अंतर्गत ब्याईजी को निमंत्रित कर उन्हें पाटे पर बिठाया जाता है। तिलक किया जाता है। हल्दी का रंग किया नारियल दिया जाता है और उनकी पीठ पर एक मीटर करीब सफेद कपड़ा ओढ़ा उस पर सास द्वारा कुमकुम् का थापा दिया जाता है। इस अवसर पर कांसी के वाटके में चांदी की रकम-रूपये आदि दिये जाते हैं। थापे के रूप में थाली में कुमकुम् का घोल कर पूरी हथेली रंग कर कपड़े पर थप्पा दी जाती है।

मसखरी पर उतर आए महिला समुदाय का मन देख थापे के साथ-साथ ब्याईजी की दाढ़ी भी पूरी कुमकुम् रंगी कर दी जाती है। इस मौके पर ब्याईजी तथा अन्य साथ आए समधियों पर केसरिया रंग की बौछार भी की जाती है। यह बौछार कभी-कभी उन्हें तरबतर कर देने वाली भी होती है मगर ब्याई-सगे लाचार हो कुछ भी कहने की स्थिति में नहीं रहते हैं। यह स्थिति बहू पक्ष-परिवार वालों द्वारा अधिक स्नेह प्रदर्शन की सूचक होती है।

(44) चूड़ा पहनाना :

लड़की की विदाई पूर्व ठीक ढंग से श्रंगारित किया जाता है। नायण उसके सिर के बालों की चोटी करती है। मेंहदी लगाती है। नणद काजल, टींकी करती है। आरती करती है। सोने की चूड़ियां पहनाई जाती हैं। भाभी मूठिया पहनाती है। पहले लखारा आता जो लाख का चूड़ा पहनाता। महिलाएं मिलकर गातीं हैं। यथा-

(क)

हाड़ौती में मेथ्यो चूड़ो वापरियो

(ख)

चूड़ो चंदरी रो राज
टीपां सोना री
पैरण वाली नखराळी ओ राज
केसरिया ओ राज
चूड़ो चंदरी रो....

(45) लेणे बांटना :

शादी की विदाई पर वधू के साथ भांडा भेजा जाता है। यह एक बड़ा कलश होता है जिसमें लड्डू-पूड़ी का चूरा भर लाल कपड़े से उसका मुख बांध दिया जाता है। इसे भांडा का कलश कहते हैं। घर लौटने पर गांव में अपनी जात बिरादरी तथा सगेसोई के घर उस भांडा के थाल सजाये जाते हैं।

थाल में नमूने के रूप में लड्डू-पूड़ी का मुट्ठी-दो मुट्ठी मिश्रित मिष्ठान्न सजाया जाकर भाई-गरासिया महिलाएं सजधजकर गीत गाती हुई घर-घर एक-एक लेणा बांटती है। भांडा का लेणा पाकर यह समझ लिया जाता है कि ब्याह के घर बहू आ गई है। इन महिलाओं के साथ बहू भी चूंदड़ ओढ़े होती है। यह चूंदड़ भी भांडे के साथ उसके पीहर द्वारा भेजी जाती है। लेणे से तात्पर्य नमूने से है। यह प्रसंग वधू के साथ बरात लौटने का सूचक है।

ऐसे ही लेणे बहू जब अपने पीहर लौटती है तब ससुराल की ओर से जो मिष्ठान्न ले जाती है उसे बांटे जाते हैं। यह इस बात का प्रतीक है कि विवाहोपरांत बालिका श्वसुरगृह से अपने पीहर लौट आई है। ऐसे लेणे गर्भावस्था में सातवें माह बहू को जब उसके पीहर ले जाया जाता है तब और संतानोत्पत्ति के पश्चात जब वह पीहर से अपने ससुराल लौटती है तब भी बांटे जाते हैं।

सगपण होने के बाद विवाह पूर्व जब वर पक्ष द्वारा वधू को पोशाक तथा आभूषण स्वरूप जो सामान भेजा जाता है जिसे चीड़ी भेजना कहते हैं, तब भी चीड़ी का लेणा नाम से बांटे जाते हैं। इसी प्रकार वर के घर वधू पक्ष द्वारा विवाह पूर्व जो वर तथा उसके समधियों के लिए पोशाक-कपड़ा-आभूषण तथा अन्य उपयोगी सामान भेजा जाता है जिसे तिलक आना कहते हैं, तब भी तिलक दस्तूर के लेणे बांटे जाते हैं।

(46) वींद गोठ करना :

विवाहोपरांत जिस दिन बारात अपने घर लौटती है उस दिन दूल्हे के गृहप्रवेश से पूर्व समूह भोज रखा जाता है जिसे 'वींद गोठ' कहते हैं। यह गोठ इस बात की सूचक है कि सफलतापूर्वक बिना किसी विघ्न-बाधा के दूल्हाराज दुल्हन ले आया है।

यह गोठ गांव बाहर किसी कुंड, बावड़ी, नदी किनारे सघन वृक्ष के नीचे या ऐसे स्थल पर होती है जहां सभी लोग रंजन के साथ जीम सकें। यह अक्सर संध्या-रात्रि को होता है। इसके बाद दूल्हा-दुल्हिन की वनोली निकाली जाती है। यह वनोली बड़े ठाठ से गाजे-बाजे के साथ गांव में प्रवेश करती है।

मेरे अपने गांव कानोड़ में 60 वर्ष पूर्व मेरे बड़े भाई स्मृति शेष डॉ. नरेन्द्र भानावत की जिस ठाठबाट से वनोली निकाली गई वैसी उसके बाद किसी अन्य की देखने को नहीं मिली।

इस वनोली में पांच सजेसजाये ऊंट तो डूंगले वाले मेरे मौसी के बेटे-भाइयों के ही थे। कुछ घोड़े और सजासजाया एक बैल-रथ था। कभी-कभी कोई संयोग बैठ जाता है तब ही ऐसा उमड़ाव देखा जाता है। बराती, घराती और पूरा गांव हर्षमग्न था।

इसका सबसे बड़ा कारण यह ऐसे घर की शादी थी जिसमें घूंघट विहीन पढ़ी-लिखी बहू आई। फिर घर में सबसे बड़े मेरे भाई साहब ही थे। और कोई घर में बड़ा नहीं था अत: वींद की कोथली भी मां ने मुझे पकड़ा दी थी। यह अपवाद स्वरूप ही था।

जो वींद कोथली लेता है वह घर का मुखिया होता है और आने वाली बहू भी उसके धोक लगती है। इस कारण भाभीजी द्वारा मेरे चरण छूने की जो रस्म की गई उसके कारण मैंने अपने आपको इतना शर्मिन्दा तब तो पाया ही, आज भी दादाजी, पिताजी, चाचाजी किसी के नहीं रहने और कमजोर आर्थिक पक्ष के कारण निकटस्थ सग्गों की दूरी और उनके असहयोग किये जाने को याद कर प्रसादजी की इन पंक्तियों को चरितार्थ पाता गमगीन हुआ रहता हूं-

''जो घनीभूत पीड़ा थी,
मस्तक में स्मृति सी छाई।
दुर्दिन में आंसू बनकर,
वह आज बरसने आई।।''

(47) दीवाली आणा करना :

शादी के बाद आने वाली प्रथम दीपावली को लड़की का मुकलावा कराया जाता है जिसे दीवाली-आणा कहते हैं। मुकलावे की तैयारी बहुत पहले से ही कर दी जाती है जिसमें लड़की के काम आनेवाली कई चीजें दी जाती हैं। इनमें वांदरवाल, विटावणा, खुलेची, बीजणी, मूंदड़ा, पच्चीस अथवा पचास कांचली कापड़े तथा कपड़े व रूई के बने हाथी, घोड़ा एवं ऊंट मुख्य हैं जो मांगलिक कहे जाते हैं। आजकल तो कई-कई भेंटें चल पड़ी हैं।

वांदरवाल रंगबिरंगी कोथलियों से बनाई जाती है जो पांच कोथलियों से लेकर 6 कोथलियों तक की उतार लिये होती है। इन कोथलियों के फूंदे तथा रंगबिरंगे मोती लटके होते हैं। कोथलियां अलग-अलग रंगों की होती हैं जो आपस में एक-दूसरे से जुड़ी रहती हैं। वांदरवाल अक्सर परिंडे (पानी के स्थान) के पास दीवाल पर लटका दी जाती है। कोथलियों में दैनिक जीवन में काम आनेवाली आवश्यक चीजें भरी रहती हैं। 'विटावणा' बिछात को कहते हैं।

यदाकदा जब जमाई भोजन करते हैं तब यह बिछाया जाता है। यह विविध रंगों तथा भांत-भांत के कपड़ों का मिश्रित रूप लिए होता है। खुलेची में प्राय: सिलाई का सामान कैंची, सुई-डोरे, कापड़े-कापे आदि रखे जाते हैं। हाथी-घोड़ा कमरे की सजावट में सहायक बनते हैं। ये सारी चीजें गृहिणियां स्वयं ही तैयार करती हैं।

लड़कियां अपने पीहर से दी हुई इन चीजों को बड़ी हिफाजत से रखती हैं। यही कारण है कि कई घरों में साठ-साठ, सित्तर-सित्तर वर्ष पुरानी मुकलावे में दी हुई खुलेचियां, विटावणे तथा वांदरवालें देखने को मिलती हैं। गीतों में भी इनका वर्णन मिलता है-

मोत्यां रा लूमक झूमका
कसतूरी ओ राजा वांदरवाळ
बधावो जी म्हारे आवियो।

अर्थात् मोतियों की लड़ोंवाली लूमती-झूमती वांदरवाळ। मेरे घर बधावा आया है।

ऐसे और भी प्रसंग तथा रीतिरिवाज हैं किंतु समय एवं परिस्थिति के कारण अब बहुत कुछ बदल गया है। बहुत सारे काज अति संक्षिप्त हो गये हैं और नया जुड़ाव भी हो गया है। यह सब मेरे देखते-देखते हुआ। मैं इन सबका साक्षी ही नहीं, भोगी भी रहा हूं।

मेरी माताजी और भी प्रसंग सुनाती थीं किंतु अब वो सारी जानकारी देने वाला कोई नहीं है। मेरी बड़ी बहिन (96) भी अब उम्र के पड़ाव को झेलती अधिक याद लिए नहीं है।

(-प्रस्तुति : शब्द रंजन टीम)

- अगले अंक से पढ़ें कैसे-कैसे अजूबे मानवेतर विवाह

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।